श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽसिदिवाकरम्।। १ ।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम।। 2 ।।
धरणीगर्भसंभूतं विधुत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारंशक्तिहस्तंचमगंलंप्णमाम्यहम्।। ३ ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यंसौम्यगुणोपेतंतंवुधंप्रणमाम्यहम् ।। ४ ।।
देवानां च ऋषीणां च गुरूं काड़वनसंनिभम्।
बुद्धिभूतंत्रिलोकेशंतंनमामिबृहस्पतिम् ।। ५ ।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्
सर्वशास्त्रप्रवक्तारंभार्गवंप्रणमाम्यहम् ।। ६ ।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसुभूतंतंनमामिशनैश्वरम् ।। ७ ।।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमदनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतंतंराहुंप्रणमाम्यहम्।। ८ ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।। ६ ।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भयविष्यति ।। १ ।।
नरनारीनृपाणां च भवेहुः स्वप्रनाशनम
ऐश्वर्यमतुलंतेषामारोग्यंपुष्टिवर्धनम् ।। 2 ।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।। ३ ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

Red Astro Pro
Version - 6.0

ज़्योतिषीय सारिणी

जन्म दिन–	26 October 2005 (Wednesday)	**सांपातिक काल–**	24:08:42 hrs
जन्म समय–	09:30:00PM	**सूर्योदय–**	05:50:14AM
जन्म स्थान–	Bhagalpur , INDIA	**सूर्यास्त–**	05:01:58PM
रेखांश–	087:00:00E	**अयनांश–**	N.C.Lahiri (023:56:17)
अक्षांश–	025:15:00N		
समयक्षेत्र–	-05:30:00 hrs	**जन्म–दिन का ग्रह–**	**बुध**
समय संशोधन–	00:00:00 hrs	**जन्म–समय का ग्रह–**	**शनि**
जीएमटी. समय–	16:00:00 hrs		
स्थानीय समय संस्कार–	00:18:00 hrs		
स्थानीय समय–	21:48:00 hrs		

अवकहड़ा चक्र

लग्न :	मिथुन
लग्नाधिपति :	वुध
राशि (चन्द्रमा) :	कर्क
राशिपति :	चन्द्रमा
नक्षत्र :	आश्लेषा
नक्षत्रपति :	वुध
नक्षत्र चरण :	4
पाया :	रजत
ऋतु :	शरद
मास :	कार्तिक
पक्ष :	कृष्ण
तिथि :	नवमी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता
तिथि पति :	सूर्य
करण :	गरिजा
करण श्रेणी :	चर
करणपति :	वासुदेव
गण :	राक्षस
वर्ण :	विप्र
योनि :	विल्ली (पु0)
सूर्य सिद्धान्त योग :	शुभ
रज्जु :	पद
वश्य :	जलचर
तत्व :	जल
तत्वाधिपति :	शुक्र
विहग :	पिंगला
नाड़ी :	अन्त
नाड़ी पद :	अदि
वेध :	मूल
आद्याक्षर :	दा

घात चक्र

राशि (सूर्य) :	सिंह
मास :	पौष
तिथि :	२ ७ १२
वार :	बुधवार
नक्षत्र :	अनुराधा
प्रहर :	१
लग्न :	तुला
सूर्य सिद्धान्त योग :	धृति
करण :	नाग

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

वारेश :	वृश्चिक
वारेश :	१
फेस :	I
चन्द्र राशि (पाश्चात्य) :	सिहं
लग्न (पाश्चात्य) :	कर्क
सूर्य का अवधिपति :	मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति :	वृहस्पति
अवधि बदलाव :	(मंगल, वृहस्पति), (वृहस्पति, मंगल)

Aryan

जन्म लग्न कुण्डली

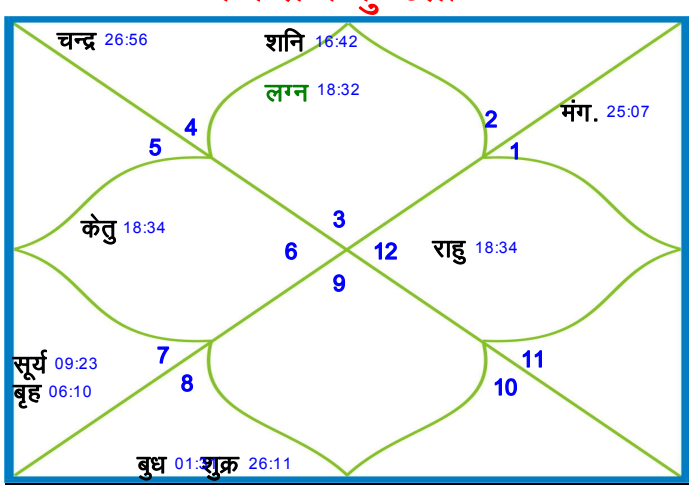

लाल किताब लग्न कुण्डली

वैदिक ज्योतिष से ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशि	राशिप0	डिग्री	नक्षत्र – चरण	न0 पति	कारक	विशेष	विशेष
लग्न	––	मिथुन	वुध	०१८:३२:४५	आर्द्रा (४)	राहु		तटस्थ भाव में	––
सूर्य	मार्गी	तुला	शुक्र	००६:२३:५१	स्वाती (१)	राहु	अपत्या	नीचस्थ	शुभ ग्रह के साथ
चन्द्रमा	मार्गी	कर्क	चन्द्रमा	०२६:५६:१७	आश्लेषा (४)	वुध	आत्म	स्वग्रही	दुष्ट ग्रह के साथ
मंगल	वक्री	मेष	मंगल	०२५:०७:०२	भरणी (४)	शुक्र	भ्रात्रि	स्वग्रही	––
वुध	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	००१:३१:०५	विशाखा (४)	वृहस्पति	दारा	शत्रु के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
वृहस्पति	मार्गी	तुला	शुक्र	००६:१०:५५	चित्रा (४)	मंगल	ज्ञाति	तटस्थ भाव में	ज्वलित
शुक्र	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	०२६:११:५३	ज्येष्ठा (३)	वुध	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शनि	मार्गी	कर्क	चन्द्रमा	०१६:४२:५६	आश्लेषा (१)	वुध	मात्रि	तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
राहु	वक्री	मीन	वृहस्पति	०१८:३४:१४	रेवती (१)	वुध		मित्र के भाव में	––
केतु	वक्री	कन्या	वुध	०१८:३४:१४	हस्त (३)	चन्द्रमा		तटस्थ भाव में	––

लाल किताब से ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष	विशेष
सूर्य	पंचम्	3	ग्रह		हॉ		हॉ		हॉ		शुभ भाव में
चन्द्रमा	द्वितीय	2	ग्रह		हॉ		हॉ			उच्चस्थ	शुभ भाव में
मंगल	एकादश	11 , 6	राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में
वुध	षष्टम्	1 , 4	ग्रह						हॉ	उच्चस्थ	शुभ भाव में
वृहस्पति	पंचम्	7 , 10	ग्रह	हॉ			हॉ				शुभ भाव में
शुक्र (बद)	षष्टम्	12 , 5	ग्रह						हॉ	नीचस्थ	अशुभ भाव में
शनि	द्वितीय	8 , 9	राशि								शुभ भाव में
राहु	दशम्		ग्रह						हॉ	नीचस्थ	अशुभ भाव में
केतु	चतुर्थ		राशि				हॉ	हॉ			

लाल किताब से भावों (खानों) की स्थिति

खाना न•	खाना न•	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने वाला
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२	चन्द्रमा, शनि	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३		बुध	मंगल	हाँ	राहु	केतु	बुध
४	केतु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५	सूर्य, बृहस्पति	सूर्य	बृहस्पति				सूर्य
६	बुध, शुक्र	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध	हाँ	शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०	राहु	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११	मंगल	शनि	शनि				बृहस्पति
१२		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

(c) Red Astro v.6.0 pro

Aryan

चन्द्र कुण्डली

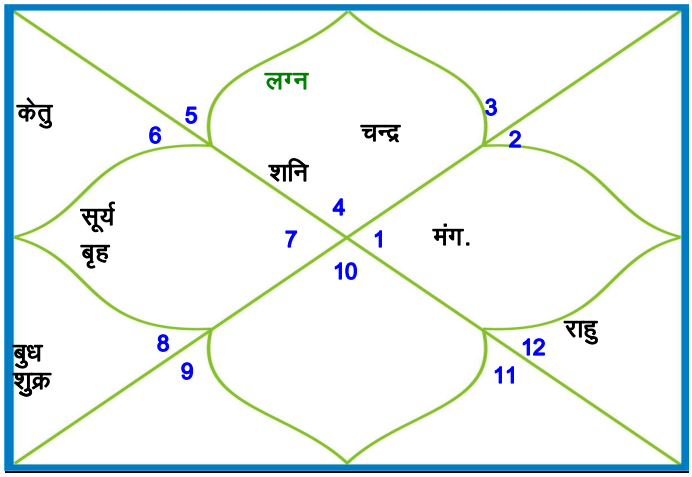

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

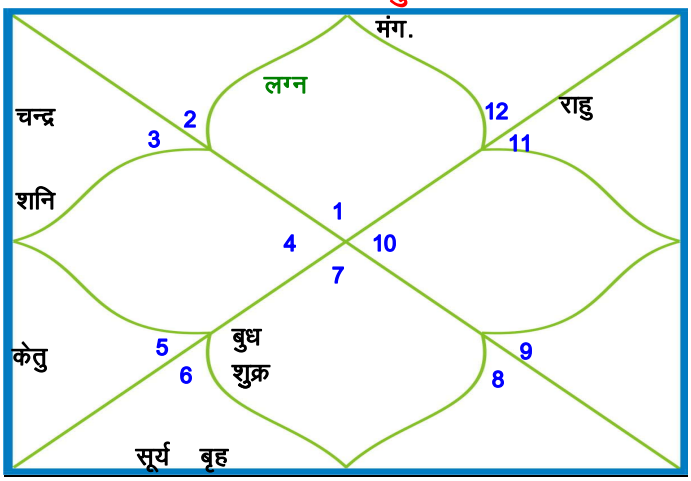

लाल किताब शत्रु-मित्र सारिणी

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक	शनि	राहु	केतु
सूर्य		मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
चन्द्रमा	मित्र		सम	मित्र	सम	सम	सम	सम	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र		शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	सम		सम	मित्र	सम	मित्र	सम
बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु		शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम		मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र		मित्र	सम
राहु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	शत्रु	मित्र		मित्र
केतु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	

मसनुई ग्रह	पक्का ग्रह	जातक के जीवन पर प्रभाव
सूर्य + बृहस्पति	चन्द्रमा	माता-पिता
चन्द्रमा + शनि	केतु (नीच)	जीवन में आराम और सुख
बुध + शुक्र	सूर्य	स्वास्थ्य

ग्रह	भाव न.	परिभाषा
सूर्य	५	परिवार की उन्नति का मालिक, किन्तु ईर्ष्या भरा अर्थात् इर्ष्या करने वाला
चन्द्रमा	२	खुद पैदा की हुई माया की देवी
मंगल	११	तीन कुत्ते रखना मुबारक फल देंगे (धेवता, साला या कुत्ता)
बुध	६	गुमनाम योगी, दूसरों के लिए राजा
बृहस्पति	५	इंसानी सिफ्तों का मालिक इज्जत-आबरू का मालिक, ब्रह्मज्ञानी मगर आग का बांस
शुक्र	६	काल्पनिक इश्क, धर्महीना और 'लल्लू करे कब्बाल्लिया, रब सिद्धियां पावें'
शनि	२	गुरू शरण
राहु	१०	सांप की फन या सांप की मणि
सूर्य + बृहस्पति	५	मान सम्मान देता है
बृहस्पति + सूर्य	५	पत्थर में मोती

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी ोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:५६:१७) : बुध : ३ व0 १० मा0 २५ दि0

क0	ग्रह दशा	अवधि	से ———— तक
१	बुध दशा	३ व0 १० मा0	२६:१०:२००५ से २१:०६:२००६
२	केतु दशा	७ व0 ० मा0	२१:०६:२००६ से २१:०६:२०१६
३	शुक्र दशा	२० व0 ० मा0	२१:०६:२०१६ से २१:०६:२०३६
४	सूर्य दशा	६ व0 ० मा0	२१:०६:२०३६ से २१:०६:२०४२
५	चन्द्रमा दशा	१० व0 ० मा0	२१:०६:२०४२ से २१:०६:२०५२
६	मंगल दशा	७ व0 ० मा0	२१:०६:२०५२ से २१:०६:२०५६
७	राह दशा	१८ व0 ० मा0	२१:०६:२०५६ से २१:०६:२०७७
८	वृहस्पति दशा	१६ व0 ० मा0	२१:०६:२०७७ से २१:०६:२०६३
६	शनि दशा	१६ व0 ० मा0	२१:०६:२०६३ से २१:०६:२११२

शुक्र महादशा
२१:०६:२०१६ से २१:०६:२०३६

अन्तर्दशा	से ——
शुक्र	२१:०६:२०१६
सूर्य	२१:०१:२०२०
चन्द्रमा	२१:०१:२०२१
मंगल	२१:०६:२०२२
राहु	२१:११:२०२३
वृहस्पति	२१:११:२०२६
शनि	२३:०७:२०२६
बुध	२१:०६:२०३२
केतु	२३:०७:२०३५

चन्द्रमा अन्तर्दशा
२१:०१:२०२१ से २१:०६:२०२२

प्रत्यन्तर्दशा	से ——
चन्द्रमा	२१:०१:२०२१
मंगल	१३:०३:२०२१
राहु	१७:०४:२०२१
वृहस्पति	१७:०७:२०२१
शनि	०७:१०:२०२१
बुध	११:०१:२०२२
केतु	०७:०४:२०२२
शुक्र	१३:०५:२०२२
सूर्य	२२:०८:२०२२

लाल किताब दशा

प्रथम चक्र २६:१०:२००५ से २६:१०:२०४० तक

शनि दशा ६ वर्ष	
राहु	२६:१०:२००५ से २६:१०:२००७ तक
बुध	२६:१०:२००७ से २६:१०:२००९ तक
शनि	२६:१०:२००९ से २६:१०:२०११ तक

राहु दशा ६ वर्ष	
मंगल	२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१३ तक
केतु	२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१५ तक
राहु	२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१७ तक

केतु दशा ३ वर्ष	
शनि	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८ तक
राहु	२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९ तक
केतु	२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२० तक

बृहस्पति दशा ६ वर्ष	
केतु	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२२ तक
बृहस्पति	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२४ तक
सूर्य	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२६ तक

सूर्य दशा २ वर्ष	
सूर्य	२६:१०:२०२६ से २७:०७:२०२७
चन्द्रमा	२७:०७:२०२७ से २६:०४:२०२८
मंगल	२६:०४:२०२८ से २६:०१:२०२९ तक

चन्द्रमा दशा १ वर्ष	
बृहस्पति	२६:०१:२०२९ से २७:०५:२०२९ तक
सूर्य	२७:०५:२०२९ से २६:०९:२०२९
चन्द्रमा	२६:०९:२०२९ से २६:०१:२०३० तक

शुक्र दशा ३ वर्ष	
मंगल	२६:०१:२०३० से २६:०१:२०३१ तक
शुक्र	२६:०१:२०३१ से २६:०१:२०३२ तक
बुध	२६:०१:२०३२ से २६:०१:२०३३ तक

मंगल दशा ६ वर्ष	
मंगल	२६:०१:२०३३ से २६:०१:२०३५ तक
शनि	२६:०१:२०३५ से २६:०१:२०३७ तक
शुक्र	२६:०१:२०३७ से २६:०१:२०३९ तक

बुध दशा २ वर्ष	
बुध	२६:०१:२०३९ से २६:१०:२०३९ तक
मंगल	२६:१०:२०३९ से २७:०७:२०४० तक
बृहस्पति	२७:०७:२०४० से २७:०४:२०४१ तक

द्वितिय चक्र २६:१०:२०४० से २६:१०:२०७५ तक

शनि दशा ६ वर्ष	
राहु	२७:०४:२०४१ से २७:०४:२०४३ तक
बुध	२७:०४:२०४३ से २७:०४:२०४५ तक
शनि	२७:०४:२०४५ से २७:०४:२०४७ तक

राहु दशा ६ वर्ष	
मंगल	२७:०४:२०४७ से २७:०४:२०४९ तक
केतु	२७:०४:२०४९ से २७:०४:२०५१ तक
राहु	२७:०४:२०५१ से २७:०४:२०५३ तक

केतु दशा ३ वर्ष	
शनि	२७:०४:२०५३ से २७:०४:२०५४ तक
राहु	२७:०४:२०५४ से २७:०४:२०५५ तक
केतु	२७:०४:२०५५ से २६:०४:२०५६ तक

बृहस्पति दशा ६ वर्ष	
केतु	२६:०४:२०५६ से २७:०४:२०५८ तक
बृहस्पति	२७:०४:२०५८ से २६:०४:२०६० तक
सूर्य	२६:०४:२०६० से २७:०४:२०६२ तक

सूर्य दशा २ वर्ष	
सूर्य	२७:०४:२०६२ से २६:०१:२०६३ तक
चन्द्रमा	२६:०१:२०६३ से २६:१०:२०६३ तक
मंगल	२६:१०:२०६३ से २७:०७:२०६४ तक

चन्द्रमा दशा १ वर्ष	
बृहस्पति	२७:०७:२०६४ से २६:११:२०६४ तक
सूर्य	२६:११:२०६४ से २७:०३:२०६५ तक
चन्द्रमा	२७:०३:२०६५ से २७:०७:२०६५ तक

शुक्र दशा ३ वर्ष	
मंगल	२७:०७:२०६५ से २७:०७:२०६६
शुक्र	२७:०७:२०६६ से २७:०७:२०६७
बुध	२७:०७:२०६७ से २७:०७:२०६८

मंगल दशा ६ वर्ष	
मंगल	२७:०७:२०६८ से २७:०७:२०७०
शनि	२७:०७:२०७० से २७:०७:२०७२
शुक्र	२७:०७:२०७२ से २७:०७:२०७४

बुध दशा २ वर्ष	
बुध	२७:०७:२०७४ से २७:०४:२०७५ तक
मंगल	२७:०४:२०७५ से २६:०१:२०७६ तक
बृहस्पति	२६:०१:२०७६ से २६:१०:२०७६ तक

तृतिय चक्र २६:१०:२०७५ से २६:१०:२११० तक

शनि दशा ६ वर्ष	
राहु	२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७८ तक
बुध	२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०८० तक
शनि	२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८२ तक

राहु दशा ६ वर्ष	
मंगल	२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८४ तक
केतु	२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८६ तक
राहु	२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०८८ तक

केतु दशा ३ वर्ष	
शनि	२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८९ तक
राहु	२६:१०:२०८९ से २६:१०:२०९० तक
केतु	२६:१०:२०९० से २६:१०:२०९१ तक

बृहस्पति दशा ६ वर्ष	
केतु	२६:१०:२०९१ से २६:१०:२०९३ तक
बृहस्पति	२६:१०:२०९३ से २६:१०:२०९५ तक
सूर्य	२६:१०:२०९५ से २६:१०:२०९७ तक

सूर्य दशा २ वर्ष	
सूर्य	२६:१०:२०९७ से २७:०७:२०९८
चन्द्रमा	२७:०७:२०९८ से २७:०४:२०९९
मंगल	२७:०४:२०९९ से २६:०१:२१०० तक

चन्द्रमा दशा १ वर्ष	
बृहस्पति	२६:०१:२१०० से २७:०५:२१०० तक
सूर्य	२७:०५:२१०० से २६:०९:२१०० तक
चन्द्रमा	२६:०९:२१०० से २६:०१:२१०१ तक

शुक्र दशा ३ वर्ष	
मंगल	२६:०१:२१०१ से २६:०१:२१०२ तक
शुक्र	२६:०१:२१०२ से २६:०१:२१०३ तक
बुध	२६:०१:२१०३ से २६:०१:२१०४ तक

मंगल दशा ६ वर्ष	
मंगल	२६:०१:२१०४ से २६:०१:२१०६ तक
शनि	२६:०१:२१०६ से २६:०१:२१०८ तक
शुक्र	२६:०१:२१०८ से २६:०१:२११० तक

बुध दशा २ वर्ष	
बुध	२६:०१:२११० से २६:१०:२११० तक
मंगल	२६:१०:२११० से २७:०७:२१११ तक
बृहस्पति	२७:०७:२१११ से २६:०४:२११२ तक

लाल किताब में ग्रहों की दृष्टि

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा				चतुर्थ		चतुर्थ			
मंगल									
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि				चतुर्थ		चतुर्थ			
राहु									
केतु								पूर्ण	

ग्रहों की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य			0						
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति			0						
शुक्र									
शनि			0						0
राहु		0		0		0	0		0
केतु								0	

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल				0		0			
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु	0				0				
केतु			0						

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा								0	
मंगल									
बुध		0					0		
बृहस्पति									
शुक्र		0					0		
शनि								0	
राहु				0		0			
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य		0					0		
चन्द्रमा			0						
मंगल									
बुध									
बृहस्पति		0					0		
शुक्र									
शनि			0						
राहु									
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य				0		0			
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति				0		0			
शुक्र									
शनि									
राहु			0						
केतु	0				0				

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									0
मंगल									
बुध									0
बृहस्पति									
शुक्र									0
शनि									0
राहु									0
केतु		0		0		0	0	0	

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा				0		0			
मंगल									
बुध								0	
बृहस्पति									
शुक्र								0	
शनि				0		0			
राहु		0					0		
केतु									

जातक के हाथ की रेखाओं का लाल किताब से एक अनुमान

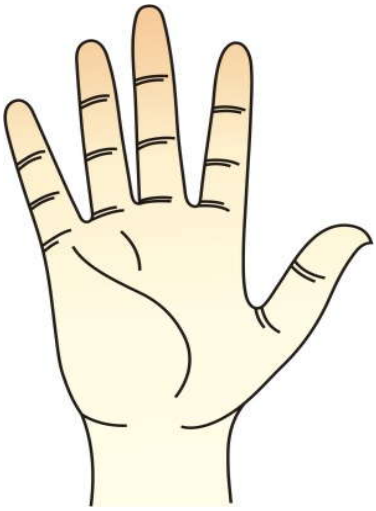

सूर्य पांचवें भाव में

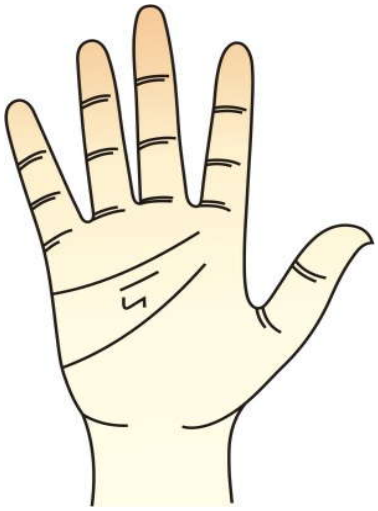

चन्द्रमा दूसरे भाव में

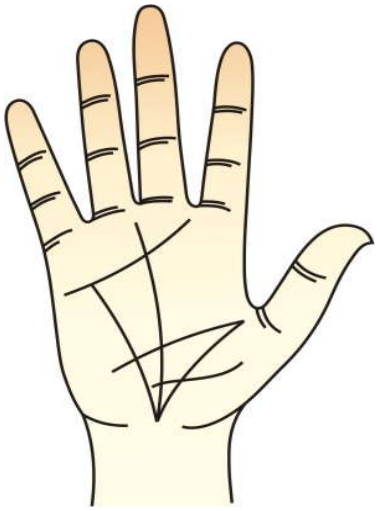

मंगल ग्यारहवें भाव में

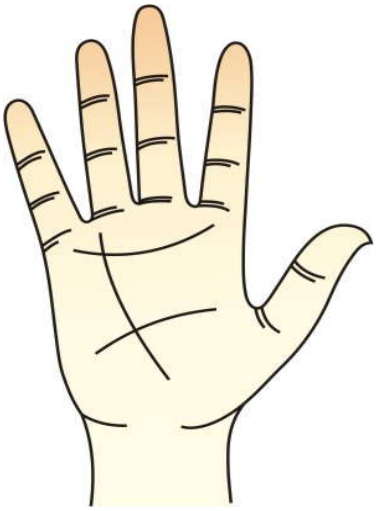

बुध छठवें भाव में

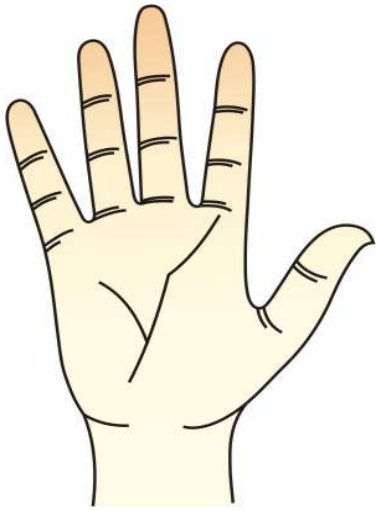

बृहस्पति पांचवें भाव में

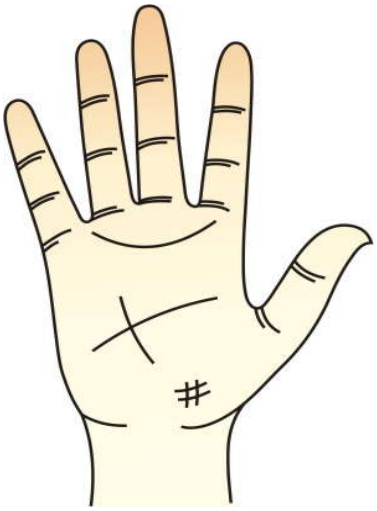

शुक्र छठवें भाव में

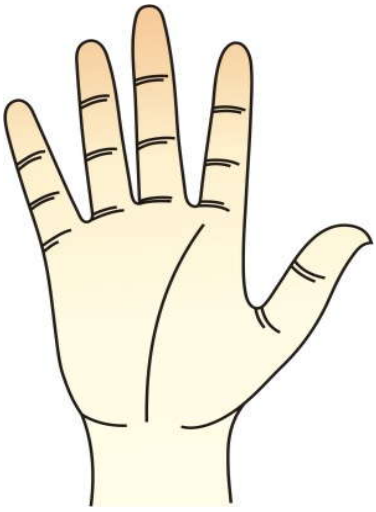

शनि दूसरे भाव में

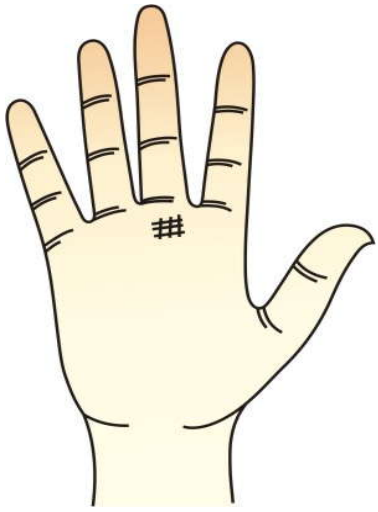

राहु दसवें भाव में

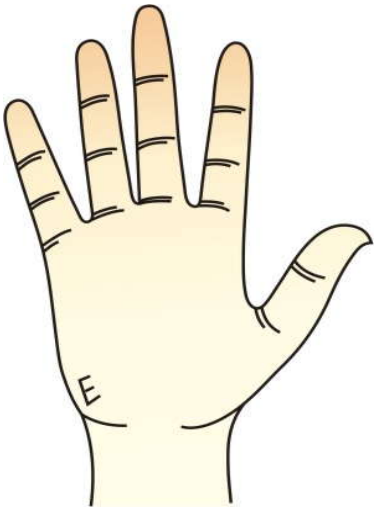

केतु चौथे भाव में

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी ोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:५६:१७) : वुध : ३ व0 १0 मा0 २५ दि0

क0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से ———————— तक
1	☿ वुध महादशा	३ व0 १0 मा0 २५ दि0	२६:१0:२00५ —— २१:0६:२00६
2	☋ केतु महादशा	७ व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२00६ —— २१:0६:२0१६
3	♀ शुक्र महादशा	२0 व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२0१६ —— २१:0६:२0३६
4	☉ सूर्य महादशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२0३६ —— २१:0६:२0४२
5	☽ चन्द्रमा महादशा	१0 व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२0४२ —— २१:0६:२0५२
6	♂ मंगल महादशा	७ व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२0५२ —— २१:0६:२0५६
7	☊ राहु महादशा	१८ व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२0५६ —— २१:0६:२0७७
8	♃ वृहस्पति महादशा	१६ व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२0७७ —— २१:0६:२0६३
9	♄ शनि महादशा	१६ व0 0 मा0 0 दि0	२१:0६:२0६३ —— २१:0६:२११२

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

वुध महादशा
२६:१0:२00५ —— २१:0६:२00६

अन्तर्दशा	से —— तक
वुध	
केतु	
शुक्र	
सूर्य	
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
वृहस्पति	२६:१0:२00५ से १२:0१:२00७
शनि	१२:0१:२00७ से २१:0६:२00६

केतु महादशा
२१:0६:२00६ ... २१:0६:२0१६

अन्तर्दशा	से —— तक
केतु	२१:0६:२00६ से १७:0२:२0१0
शुक्र	१७:0२:२0१0 से १६:0४:२0११
सूर्य	१६:0४:२0११ से २५:0८:२0११
चन्द्रमा	२५:0८:२0११ से २५:0३:२0१२
मंगल	२५:0३:२0१२ से २२:0८:२0१२
राहु	२२:0८:२0१२ से 0६:0६:२0१३
वृहस्पति	0६:0६:२0१३ से १६:0८:२0१४
शनि	१६:0८:२0१४ से २४:0६:२0१५
वुध	२४:0६:२0१५ से २१:0६:२0१६
केतु	२१:0६:२0१६ से २१:0१:२0२0
सूर्य	२१:0१:२0२0 से २१:0१:२0२१
चन्द्रमा	२१:0१:२0२१ से २१:0६:२0२२
मंगल	२१:0६:२0२२ से २१:११:२0२३
राहु	२१:११:२0२३ से २१:११:२0२६
वृहस्पति	२१:११:२0२६ से २३:0७:२0२६
शनि	२३:0७:२0२६ से २१:0६:२0३२
वुध	२१:0६:२0३२ से २३:0७:२0३५
केतु	२३:0७:२0३५ से २१:0६:२0३६

शुक्र महादशा
२१:0६:२0१६ ... २१:0६:२0३६

अन्तर्दशा	से —— तक
शुक्र	२१:0६:२0१६ से २१:0१:२0२0
सूर्य	२१:0१:२0२0 से २१:0१:२0२१
चन्द्रमा	२१:0१:२0२१ से २१:0६:२0२२
मंगल	२१:0६:२0२२ से २१:११:२0२३
राहु	२१:११:२0२३ से २१:११:२0२६
वृहस्पति	२१:११:२0२६ से २३:0७:२0२६
शनि	२३:0७:२0२६ से २१:0६:२0३२
वुध	२१:0६:२0३२ से २३:0७:२0३५
केतु	२३:0७:२0३५ से २१:0६:२0३६

सूर्य महादशा
२१:0६:२0३६ ... २१:0६:२0४२

अन्तर्दशा	से —— तक
सूर्य	२१:0६:२0३६ से 0६:0१:२0३७
चन्द्रमा	0६:0१:२0३७ से १0:0७:२0३७
मंगल	१0:0७:२0३७ से १५:११:२0३७
राहु	१५:११:२0३७ से १0:१0:२0३८
वृहस्पति	१0:१0:२0३८ से २६:0७:२0३६
शनि	२६:0७:२0३६ से १0:0७:२0४0
वुध	१0:0७:२0४0 से १७:0५:२0४१
केतु	१७:0५:२0४१ से २१:0६:२0४१
शुक्र	२१:0६:२0४१ से २१:0६:२0४२

चन्द्रमा महादशा
२१:0६:२0४२ ... २१:0६:२0५२

अन्तर्दशा	से —— तक
चन्द्रमा	२१:0६:२0४२ से २३:0७:२0४३
मंगल	२३:0७:२0४३ से २१:0२:२0४४
राहु	२१:0२:२0४४ से २२:0८:२0४५
वृहस्पति	२२:0८:२0४५ से २२:१२:२0४६
शनि	२२:१२:२0४६ से २२:0७:२0४८
वुध	२२:0७:२0४८ से २२:१२:२0४६
केतु	२२:१२:२0४६ से २३:0७:२0५0
शुक्र	२३:0७:२0५0 से २२:0३:२0५२
सूर्य	२२:0३:२0५२ से २१:0६:२0५२
चन्द्रमा	२१:0६:२0५२ से १७:0२:२0५३
मंगल	१७:0२:२0५३ से 0८:0३:२0५४
राहु	0८:0३:२0५४ से ११:0२:२0५५
वृहस्पति	११:0२:२0५५ से २२:0३:२0५६
शनि	२२:0३:२0५६ से २0:0३:२0५७
वुध	२0:0३:२0५७ से १६:0८:२0५७
केतु	१६:0८:२0५७ से १६:१0:२0५८
शुक्र	१६:१0:२0५८ से २0:0२:२0५६
सूर्य	२0:0२:२0५६ से २१:0६:२0५६

मंगल महादशा
२१:0६:२0५२ ... २१:0६:२0५६

अन्तर्दशा	से —— तक
मंगल	२१:0६:२0५२ से १७:0२:२0५३
राहु	१७:0२:२0५३ से 0८:0३:२0५४
वृहस्पति	0८:0३:२0५४ से ११:0२:२0५५
शनि	११:0२:२0५५ से २२:0३:२0५६
वुध	२२:0३:२0५६ से २0:0३:२0५७
केतु	२0:0३:२0५७ से १६:0८:२0५७
शुक्र	१६:0८:२0५७ से १६:१0:२0५८
सूर्य	१६:१0:२0५८ से २0:0२:२0५६
चन्द्रमा	२0:0२:२0५६ से २१:0६:२0५६

राहु महादशा
२१:0६:२0५६ ... २१:0६:२0७७

अन्तर्दशा	से —— तक
राहु	२१:0६:२0५६ से 0४:0६:२0६२
वृहस्पति	0४:0६:२0६२ से २८:१0:२0६४
शनि	२८:१0:२0६४ से 0३:0६:२0६७
वुध	0३:0६:२0६७ से २३:0३:२0७0
केतु	२३:0३:२0७0 से १0:0४:२0७१
शुक्र	१0:0४:२0७१ से १0:0४:२0७४
सूर्य	१0:0४:२0७४ से 0५:0३:२0७५
चन्द्रमा	0५:0३:२0७५ से 0३:0६:२0७६
मंगल	0३:0६:२0७६ से २१:0६:२0७७

वृहस्पति महादशा
२१:0६:२0७७ ... २१:0६:२0६३

अन्तर्दशा	से —— तक
वृहस्पति	२१:0६:२0७७ से 0६:११:२0७६
शनि	0६:११:२0७६ से २३:0५:२0८२
वुध	२३:0५:२0८२ से २८:0८:२0८४
केतु	२८:0८:२0८४ से 0४:0८:२0८५
शुक्र	0४:0८:२0८५ से 0३:0४:२0८८
सूर्य	0३:0४:२0८८ से २१:0१:२0८६
चन्द्रमा	२१:0१:२0८६ से २३:0५:२0६0
मंगल	२३:0५:२0६0 से २८:0४:२0६१
राहु	२८:0४:२0६१ से २१:0६:२0६३
शनि	२१:0६:२0६३ से २४:0६:२0६६
वुध	२४:0६:२0६६ से 0४:0६:२0६६
केतु	0४:0६:२0६६ से १३:0७:२१00
शुक्र	१३:0७:२१00 से १२:0६:२१0३
सूर्य	१२:0६:२१0३ से २५:0८:२१0४
चन्द्रमा	२५:0८:२१0४ से २६:0३:२१0६
मंगल	२६:0३:२१0६ से 0४:0५:२१0७
राहु	0४:0५:२१0७ से ११:0३:२११0
वृहस्पति	११:0३:२११0 से २१:0६:२११२

षोडश वर्ग

लग्न(जन्म) – डी१

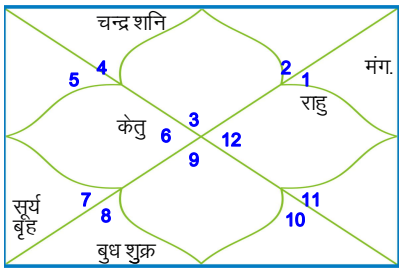

होरा – डी२

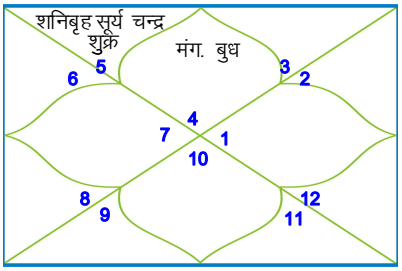

द्रेष्काण – डी३

चतुर्थांश – डी४

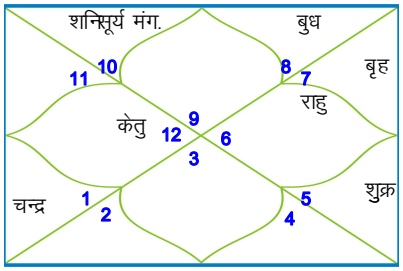

सप्तमांश – डी७

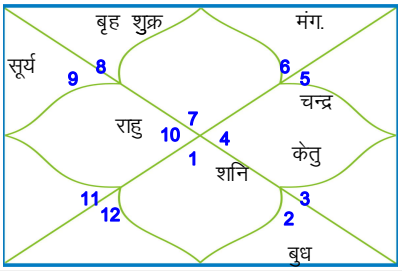

नवांश – डी९

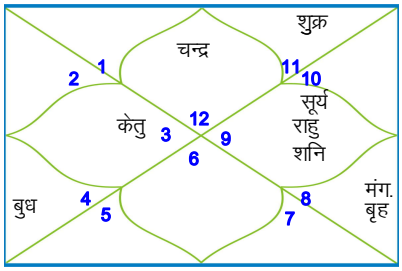

दशमांश – डी१०

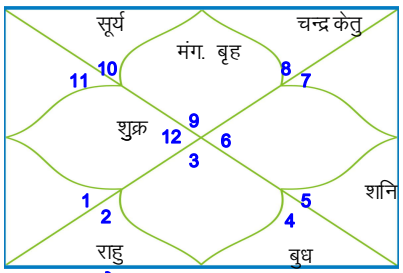

द्वादशांश – डी१२

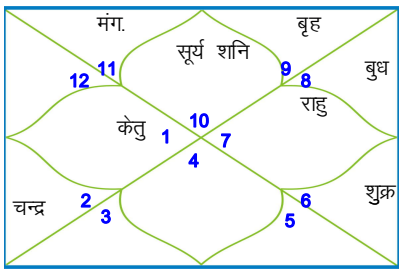

षोडशांश – डी१६

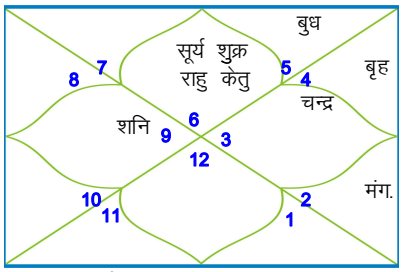

विशांश – डी२०

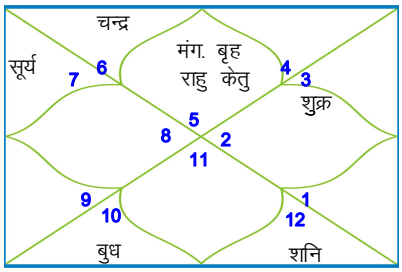

चतुर्विंशांश – डी२४

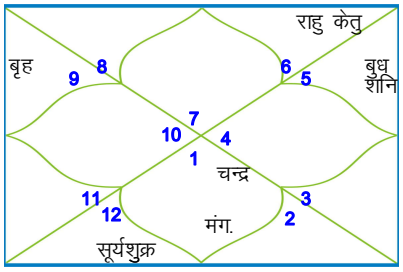

सप्तविंशांश – डी२७

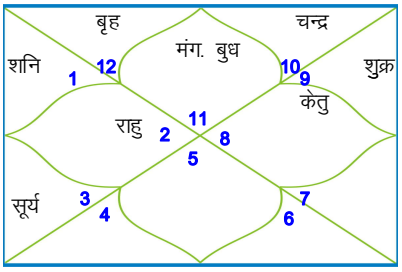

त्रिंशांश – डी३०

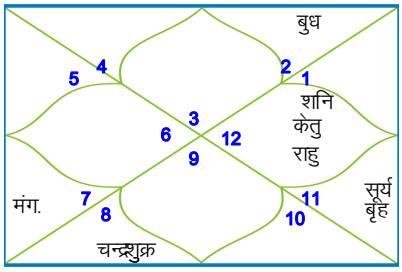

खवेदांश – डी४०

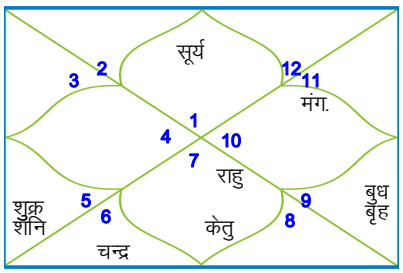

अक्षवेदांशं – डी४५

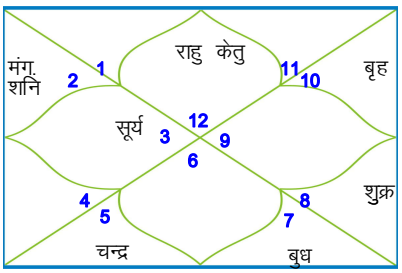

षष्ठांश – डी६०

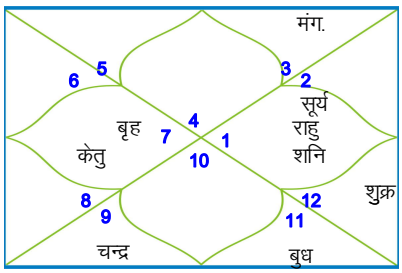

डी१ मुख्य कुण्डली, सभी मुद्दों के लिए
डी२ धन दौलत के लिए
डी३ सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य
डी४ भाग्य और रिहायशी मकान
डी७ संतान और उनकी संतान
डी९ जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य
डी१० कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता
डी१२ माता-पिता का जीवन और स्वास्थ्य
डी१६ वाहन से संबंधित बातें
डी२० अध्यात्मिक रूझान
डी२४ शिक्षा, ज्ञान और समझ
डी२७ ताकत और दुर्बलता
डी३० दरिद्रता, कठिनाईयां और दुर्गति
डी४० शुभ-अशुभ घटनाएं
डी४५ सभी मुद्दों के लिए
डी६० सभी मुद्दों के लिए

जातक के बारे में लाल किताब से सामान्य जानकारी

आप हमेशा अपनी धुन में रहेगें, नई चीजे सीखने को उत्सुक रहेगें, और अपने अर्जित ज्ञान को दूसरों के बीच में बांटने वाले होगें। आपके शौक बदलते रहेगें। किसी एक शौक को लेकर आप लंबे समय तक नहीं रह सकते हैं। आपकी विचारधारा भी बदलती रहेगी। एक समय जिस विचारधारा की हिमाकत करेगें, दूसरे ही क्षण आप उसे खुद काट सकते हैं। आप लंबे समय तक एक ही स्थान पर नहीं टिक सकते हैं।

आप एक ही समय में कई काम करने वाले होगें। आप नौकरी के साथ-साथ कोई दूसरा काम भी कर सकते हैं। हालॉकि, आप कभी आर्थिक मुश्किलों में नहीं पड़ेगें, फिर भी भविष्य के प्रति थोड़े चिंतित हो सकते हैं और कुछ धन संचित करने की योजना बना सकते हैं।

आपका वैवाहिक जीवन सफल रहेगा। हालॉकि, छोटे-मोटे मतभेद हो सकते हैं, लेकिन इससे आपका वैवाहिक जीवन प्रभावित नहीं होगा।

आप चंचल एवं बुद्धिमान होगें। आप जज़्बाती एवं भावुक भी हो सकते हैं और छोटी-छोटी बातों पर काफी खुश होगें। आपक ो लोगों के बीच रहना पसन्द होगा। आपको संपादन, संवाददाता, ट्रेवल एजेन्सी, दूरदर्शन, पब्लिसीटी से संबंधित कार्य से काफी लाभ प्राप्त हो सकता है। ऐसे कामों को करने की आपकी दिली ख्वाहिस होगी।

आपकी कुण्डली के छठे भाव में बुध होने की वजह से, आपके कुछ शत्रु होगें, जो कि आपके पीठ पीछे चुगली करेगें या आपको बदनाम करने की कोशिश करेगें। सीधे तौर पर ये आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते हैं। ऐसे शत्रु आपको अठ्ठाईस से तैंतीस साल की आयु तक बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के छठे भाव में बुध होने की वजह से, धन के हिसाब से आपकी स्थिति बहुत बढ़िया नहीं होगी। आप कुछ अधिक खर्चीले होगें तथा बेकार की चीजों में भी आपका धन खर्च हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र ठीक स्थिति में है, तो आपको विदेशों से भी धन लाभ प्राप्त हो सकता है। आप अपनी वाणी से लोगों को वश में करने में सक्षम होगें।

आपकी कुण्डली के छठे भाव में बुध होने की वजह से, आपकी कुण्डली में बुध यदि ठीक स्थिति में है, तो आप एक कुशल व्यापारी होगें। आप कामयाबी के रास्ते खोजने में माहिर होगें। दलाली से आपको काफी फायदा हो सकता है। यदि आप दिमागी काम की जगह मेहनत का काम करते हैं, तो आपको सफलता नहीं मिल सकती है। आप अपनी बुद्धि और वाणी से ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के छठे भाव में बुध होने की वजह से, आप मन से साधु होगें। आपके आशीर्वाद या बद्दुआ का असर तुरंत होगा। इसलिए आपको अपने क्रोध पर काबू रखना चाहिए। रिश्वत, बेईमानी या धोखे से अर्जित धन आपके पास नहीं टिक पायेगा और उल्टा आपका नुकसान हो सकता है।

आपकी कुण्डली के छठे भाव में बुध होने की वजह से, लाल किताब के अनुसार, किसी भी कार्य को करते समय यदि आप अपने आस-पास फूल रखते हैं, तो आपको काफी फायदा हो सकता है। किसी विशेष कार्य को करते समय किसी कन्या का आशीर्वाद लेना भी आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

लाल किताब से जीवन के विभिन्न पहलुओ से संबंधित कारण और उपाय

शिक्षा से संबंधित भविष्यवाणी और लाल किताब के उपाय

यदि आप परीक्षा में लाल रंग का पेन जिसका कैप सुनहरा हो, जिसमें किसी भी रंग की स्याही भरी हो, उसका इस्तेमाल करेगें, तो परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होगें।

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहि बानी।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

इस चौपाई का १०८ बार प्रतिदिन प्रातः काल जप करें।

ॐ माँनिसाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतोः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुना देकमवधीः काममोहितम्।।

इस मंत्र का प्रतिदिन प्रातःकाल जागते ही बिना किसी से बोले तीन बार जप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

जनक सुता जग जननी जानकी।
अतिसय प्रिय करूनानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासुकृपा निर्मल मति पावउँ।।

श्री जानकी अथवा श्री सीता राम जी के चित्रपट का पूजन करके इस मंत्र का १०८ बार प्रतिदिन जाप करने से उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्यादेहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।

श्री हनुमान जी की पूजा करके उपयुक्त दोहे का एक माला(१०८) बार प्रतिदिन जाप करें। इससे बुद्धि एवं स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी।

गुरु ग्रह गये पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई।।

इस चौपाई का प्रतिदिन एक माला(१०८) जाप करके विद्यालय जाने से निश्चय ही परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

लाल किताब के अनुसार, जो लड़के पढ़ने में कमजोर हैं उन्हे हरे रंग की तुरमली चांदी की अंगुठी या नेकलेस में पहनने से लाभ हो सकता है।

बृहस्पतिवार को पीले कपड़े में ७ हल्दी की गॉठें और बेसन की लड्डू बांधकर नदी में प्रवाहित करने से परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

शुक्ल पक्ष के सोमवार को ''ॐ नमः शिवाय'' का जाप करके लाल धागे में दो पांच मुखी रूद्राक्ष के बीच में एक छेद मुखी

रूद्राक्ष को शिवलिंग से स्पर्श कराके धारण करें।

''ॐ गंग गणपते: नम्:'' नामक मंत्र को ग्यारह बार परीक्षा आरम्भ होने से पूर्व जाप करें, परिणाम आपके पक्ष में होगा।

परीक्षा देने जाते समय किसी धार्मिक स्थान में आधा लीटर दूध दान करना उयोगी साबित हो सकता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपका संतान पढ़ने में कतरा रहा हो, या स्कूल न जाने के लिए बहाने बनाता हो, या हठ करता हो, तो तांबे का एक चौकोर टुकड़ा सफेद धागे में बांधकर उसके गले में पहनायें।

योगेश्वर ''श्री कृष्ण प्रसंग'' नामक मंत्र को पूष्य नक्षत्र या किसी शुभ दिन को लाल कलम से १७ बार सफेद पन्ने पर लिखकर परीक्षा के दौरान अपने जेब में रखें।

स्वास्थ्य से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें या छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी पत्नी बीमार रहती हैं, तो उन्हें अपने बालों में सोने का हेयर पिन लगाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और शनि एक साथ दूसरे भाव में बैठे हुए हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको गठिया, जोड़ो का दर्द या निमोनिया की शिकायत हो सकती है।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और शनि एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको चर्म रोग हो सकते हैं। उपाय के तौर पर ४३ दिन लगातार पानी में थोड़ा सा नमक मिला कर पीयें ।यदि आपके घर में कोई न कोई हमेशा रोग ग्रस्त रह रहा है, बिमारी जाने का नाम ही नहीं ले रहा है तो–आपके घर में जितनी रोटी बनती हैं, उसमें चार मीठी रोटी जोड़कर महीने में एक बार अमावस्या या सक्रांति के दिन काले कौए, काली गाय या कुत्ते को खिलाना चाहिए, अथवा महीने में एक बार अन्दर से खोखले कद्दू (कोंहड़ा) को किसी धार्मिक स्थल पर दान करना चाहिए, अथवा रात को रोगी के सिरहाने एक, दो या पांच रूपये का सिक्का रखकर प्रात: काल सफाई कर्मचारी को दान करें, अथवा यदि आप श्मसान से गुजर रहे हैं, तो एक या दो रूपये के सिक्के वहां जरूर फेकें।

धन, व्यापार, रोजगार से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में बुध छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अनाज, फल, सब्जी या छपाई ईत्यादि से संबंधित कारोबार करना चाहिए। कोई भी कार्य आरंभ करने से पहले अपनी पुत्री या बहन की पूजा करें।

आपकी कुण्डली में मंगल ग्यारहवें भाव में एवं बुध या केतु तीसरे भाव में अथवा तीसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, आप अपने पैतृक संपति को संभाल नहीं पायेगें, और आपकी आर्थिक स्थिति पर इसका बुरा प्रभाव होगा। उपाय के तौर पर आपको अपनी दोहिता(लड़की का लड़का या लड़की), साले या दामाद की सेवा करना चाहिए।

आप कुण्डली में बुध छठे भाव में किसी अन्य ग्रह के साथ बैठा हुआ है, और उस पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपको प्रिटिंग प्रेस के व्यवसाय से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और सूर्य एक साथ बैठे हुए हैं। लाल किताब में इसे साही (उत्तम) धन की संज्ञा दी गई है। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको जानवरों के क्रय-विक्रय, चावल के व्यापार अथवा फलदार वृक्षों के कार्यो से लाभ होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप तांबे से बनी हुई वस्तुओं का व्यापार करते हैं, तो आप लाभ की स्थिती में रहेगें।

आपकी कुण्डली में शुक्र छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप ट्रेवल ऐजन्ट हैं अथवा लोन या कर्ज लेकर अपना धन्धा शुरू करते हैं, तो लाभ की स्थिति रहेगें।

आपकी कुण्डली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप काली वास्तुओं का व्यापार करते हैं, तो लाभ प्राप्त होगा।

लाल किताब से मकान से संबंधित योग सावधानिया एवं नियम

आपकी कुण्डली में सूर्य पांचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपने घर की रसोई पूर्वी दिवार के साथ रखें, तो लाभ होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है, और मकान से बाहर निकलते समय सीधे हाथ पर रसोई और सामने स्नानघर या पानी का स्थान हो तो आपको कोई-न-कोई कष्ट हो सकता है। धन हानि की भी संभावना है।

यदि आपके मकान पर किसी पेड़ की छाया पड़ रही हैं, तो यह मंगल के शुभ प्रभाव को नष्ट कर देता है।

यदि आपके मकान की दिवार के पास कटा और सुखा पीपल का पेड़ है, तो आपके परिवार और धन संम्पत्ति पर इसका बुरा असर पड़ेगा। मंगल का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में बुध छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपके रिहायसी मकान का दरवाजा उत्तर की तरफ है, तो आपकी बहन, बुआ अथवा बेटी पर बुरा असर होगा।

यदि आपका मकान बंद गली के अन्तिम सिरे पर स्थित है, और उसमें हवा सीधे आती है, तो आपके संतान पर इसका बुरा प्रभाव हो सकता है। ऐसे मकान में कभी न रहें।

यदि आपके मकान पर किसी धार्मिक स्थल(मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा) आदि की छाया पड़ रही है, तो घर में बिमारीयां परेशान करती रहेगी।

रसोई घर में खाना बनाने का चुल्हा और बर्तन धोने का स्थान एक ही प्लेटफार्म पर नहीं होना चाहिए, अन्यथा घर में कलह होती रहेगी। उपाय के तौर पर इन दोनों स्थानों के मध्य में पंचमुखी हनुमान का चित्र लगायें।

घर के अन्दर यदि लोहे की चरपाई हो, तो पूर्व-दक्षिण दिशा में बिछायें।

घर के मालिक को दक्षिण–पश्चिम के कोने में सोना चाहिए।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वारा दक्षिण दिशा में है, तो वास्तु शास्त्र के हिसाब से स्त्रियों के लिए हानिकारक होगा। ऐसे मकान में केवल विधुर पुरूष ही सुख पूर्वक रह सकते हैं। यदि आप मुख्य द्वार पर तांबे की कील गाड़े, तो स्थिति सुखद हो सकती है। चांदी की चौड़ी पत्ती दरवाजा के एक कोने से दूसरे कोने तक बिछा सकते हैं। घर पर मिट्टी का बंदर रखें, जिसका मुंह दक्षिण दिशा की ओर हो। बकरी का दान करें। दिन के दो बजे के बाद साबूत मूंग की दाल किसी धार्मिक स्थल पर दान करें।

यदि आपके मकान में कोई मिट्टी वाला स्थान नहीं है, तो यह परिवार के स्त्रियों के लिए हानिकारक हो सकता है, और धन स म्पत्ति पर भी बुरा असर हो सकता है। निम्न उपाय करने से स्थिति सुखद हो सकती हैं। मिट्टी की बनी हुई औरत की मूर्ति घर में रखें। सफेद रूमाल में कपूर की टिकिया, देशी घी और रूई बांधकर रखें। घर में छोटे–मोटे कार्य करने के लिए नौकरानी रखें ।

यदि आपके मकान में धन रखने के लिए तिजोरी, आला या तहखाना बना हुआ है, तो उसे खाली बिल्कुल न रखें। बादाम अथ ावा छुआरे रख सकते हैं।

यदि आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी है, तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान न खोलें।

यदि आपको अपने घर की छत बदलनी है, तो पहले एक अस्थायी छत पुरानी छत के उपर बनायें।

लाल किताब के अनुसार, घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय सीधे हाथ की तरफ पानी का स्थान और उलटे हाथ की तरफ या पीठ की तरफ रसोई होना उत्तम होता है।

यदि आपके मकान पर पीपल इत्यादि की छाया पड़ रही है, तो यह आपके तरक्की के लिए नुकसानदायक हैं। आपको उस पीपल की जड़ में जल चढ़ाना चाहिए।

यदि आपके मकान के आस–पास कुआं है, तो उसमें भूलकर भी कुड़ा–करकट न डालें। प्रतिदिन उसमें दूध डालने से आपकी उन्नति होगी।

घर के अन्दर किकर का पेड़ न लगायें।

मकान या प्लाट का मुख्य द्वार उत्तर–पूर्व या पूर्व दिशा में होना चाहिए।

आपकी चन्द्र राशि– कर्क, वृश्चिक या मीन है। लाल किताब के अनुसार, आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में होना च ाहिए।

लाल किताब के अनुसार, सफेद रंग या पेन्ट का प्रयोग मकान में सभी जगह किया जा सकता है। नीले रंग या पेन्ट का प्रयोग शयन कक्ष या कान्फ्रेंस हॉल में करें।

हरे या क्रीम रंग का प्रयोग अध्ययन कक्ष में करें।

गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग भोजनालय में करें। पुलिस या मिलीट्री के स्थान पर लाल रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य पूर्व दिशा की ओर है, तो उसमें सफेद रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है, तो उसमें लाल, गुलाबी या संतरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में है, तो उसमें हरे या पीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार पश्चिम दिशा में है, तो उसमें नीले या हल्के नीले रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण-पूर्व दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दक्षिण-पश्चिम दिशा में है, तो मकान में हरे रंग का प्रयोग करें।

यदि आपके मकान के मुख्य द्वार उत्तर-पश्चिम दिशा में है, तो आपको अपने मकान में सफेद रंग का प्रयोग करना चाहिए।

आपको अपने मकान का मुख्य द्वार मकान के कम चौड़ाई वाले हिस्से में रखना चाहिए। यदि आपके मकान का मुख्य द्वार दो पलो का है, तो यह आपको अधिक लाभकारी होगा। यदि मुख्य द्वार अन्दर की तरफ खुलता है, तो यह अधिक लाभकारी होगा।

आपको अपने मकान के उत्तर और पूर्व दिशा में दक्षिण और पश्चिम दिशा से अधिक खुला स्थान रखना चाहिए।

आपको अपने मकान की दक्षिण और पश्चिम की दिवारें ज़्यादा मोटी और ज़्यादा ऊंची रखनी चाहिए।

मकान की छत की ढलान उत्तर, पूर्व या उत्तर-पूर्व में होनी चाहिए।

अपने घर के प्रत्येक कमरे का उत्तर-पूर्व वाला कोना खाली रखें।

मकान में बरामदा और खुली छत उत्तर और पूर्व में होनी चाहिए।

मकान में बालकनी उत्तर और पूर्व में होना चाहिए। बेसमेन्ट (तहखाना) उत्तर-पूर्वी भाग में होनी चाहिए।

यदि मकान में पत्थर की मूर्ती लगा रहे हैं, तो उसे दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगायें।

मकान के दक्षिण-पश्चिम वाले हिस्से में सम संख्या में वृक्ष लगायें।

मकान में तुलसी जी का पौधा पूर्व उत्तर या उत्तर-पूर्व में लगायें।

मकान में खिड़कीयों की संख्या उत्तर और पूर्व दिशा में अधिक होनी चाहिए। दरवाजे और खिड़कियों की संख्या सम होनी च ाहिए, परन्तु संख्या का अन्त १0, २0 इत्यादि से नहीं होना चाहिए।

मकान में सीढ़ियां दक्षिण पश्चिम या ईशान कोण को छोड़कर कही भी बनाई जा सकती हैं। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी च ाहिए। सीढ़ियों का घुमाव दक्षिणावर्ती होना चाहिए।

यदि आप अपने मकान में पानी का हौज बनवा रहे हैं, तो उसे उत्तर-पूर्व में बनवायें, यह काफी लाभदायक होगा।

यदि आप छत पर पानी की टंकी रखवा रहे हैं, तो उसे उत्तर-पश्चिम दिशा में रखवायें। टंकी का रंग काला अथवा नीला हो तो बढ़िया रहेगा।

मकान में पूजा का स्थान ईशान, पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। भगवान की मूर्ती का मुख उत्तर या पूर्व की ओर रखें। पूजा घर का आकार पिरामिड जैसा रखें। पूजा घर के फर्श का रंग सफेद या हल्का पीला होना चाहिए। पूजा घर के दिवारों का रंग क्रीम, सफेद या हल्का नीला रखें।

मकान में रसोई घर दक्षिण-पूर्व दिशा में होना चाहिए। खाना बनाते समय अपना मुख पूर्व की ओर रखें। रसोई घर की खिड़कि याँ पूर्व और दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।

मकान में भोजनकक्ष पश्चिम दिशा में रखें। खाने की मेज आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

मकान में स्नानागार पूर्व, उत्तर या उत्तर-पश्चिम भाग में रखें।

मकान में शौचालय दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शनि दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपना मकान बनवाते हैं, तो उसका निर्माण अधूरा न रखें, नहीं तो इससे आपके भाग्य पर विपरीत असर पड़ेगा।

विवाह, स्त्री और गृहस्थ-सुख से संबंधित कुछ महत्वपू र्ण योग और उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र पाचवें या छठे भाव स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने माता-पिता के मर्जी से विवाह करना चाहिए। प्रेम विवाह हरगिज नहीं करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र पहले, छठे या नवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने उम्र के २५वें वर्ष में विवाह नहीं करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ भावों में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी स्त्री सुन्दर, सुघड़ और शिक्षित होगी।

आपकी कुण्डली में बुध छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपनी बहन या बेटी का विवाह घर से उत्तर दिशा में नहीं करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में शुक्र नीच का है, और उस पर सूर्य या शनि की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब अनुसार, आपका एक से अधिक विवाह हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शुक्र पर उसके मित्र ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपकी पत्नी की आयु लंबी होग ी।

आपकी कुण्डली में शुक्र पर उसके शत्रु ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र और बुध के युति पर उनके मित्र ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आप और आपकी पत्नी की उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र ३रे, ४थे, ५वें ६ठें, ९वें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। लाल किताब के अनुसार, आपकी उम्र आपकी पत्नी की उम्र से कम होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके ससुर को चाहिए कि विवाह के समय अपनी पुत्री को सोने का क्लीप को अवश्य दें। शीघ्र विवाह हेतु- मंगल-पार्वती स्त्रोत का पाठ प्रतिदिन करें।

शीघ्र विवाह हेतु-स्नान के पश्चात् कांसे की कटोरी में सरसों का तेल भरकर मुहुर्त देखकर छाया पात्र निकालें।

शीघ्र विवाह हेतु-पीले वस्त्र में चने की दाल बांधकर बृहस्पतिवार के दिन किसी मन्दिर में दान करें।

यदि विवाह में अत्यधिक विलम्ब हो रहा है, तो वाल्मिकी रामायण के बाल-काण्ड के सर्ग ७३ का ४३ दिन तक लगातार पाठ करें।

शीघ्र विवाह हेतु दुर्गा सप्तसती के श्लोकों का पाठ ४३ दिन तक लगातार करें।

शीघ्र विवाह हेतु सात सोमवार शिवलिंग पर दूध चढ़ायें।

संतान से संबंधित भविष्यवाणी और लाल किताब के उपाय

आपकी कुण्डली मेंचन्द्रमा दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने घर में बने शिव जी की मुर्ति की पूजा नहीं करना चाहिए, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आपको संतान प्राप्ति में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में शुक्र, बृहस्पति एवम् सूर्य के बाद के भावों में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको एक से अधिक संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको शंकर जी की मूर्ति अपने पूजा स्थल पर नहीं रखना चाहिए, अन्यथा संतान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है।

आपकी कुण्डली में केतु चौथे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपको संतान प्राप्ति में विलम्ब हो रहा है, तो अपने कुल पुरोहित को पीला वस्त्र, सोना इत्यादि दान करके आर्शीवाद लेना चाहिए।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको धर्म के नाम पर चन्दा या दान नहीं लेना चाहिए, अन्यथा आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में एवम् शनि या बुध दूसरे, छठे या सातवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपका संतान पक्ष बहुत ही कमजोर होगा, आपको किसी विद्वान ज्योतिषी से सम्पर्क करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में एवम् शुक्र दूसरे, छठे या सातवें भाव में है। लाल किताब के अनुसार, आपके पुत्रों की संख्या पुत्रियों की संख्या से अधिक होगी।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पहले से छठे भाव के बीच स्थित है, लाल किताब के अनुसार, आपके पिता की आयु लम्बी होगी, और उनका आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और सूर्य कायम है। लाल किताब के अनुसार, आपको संतान प्राप्ति में कोई भी बाधा नहीं आ सकती है, और संतान भी समय पर होगी।

आपकी कुण्डली में सूर्य पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आपकी पहली संतान पुत्र है, तो वह रोग ग्रस्त हो सकता है, किसी विद्वान ज्योतिषी से आपको उपाय कराना चाहिए।

यदि आप बन्द गली के मकान में रहते है, तो आपको संतान संबंधी परेशानियों का सामना करना पर सकता है, और नर संतान की प्राप्ति में बिलम्ब हो सकता है। उपाय के तौर पर आपको बृहस्पतिवार से लगातार ४३ दिन तक प्रतिदिन केसर का तिलक लगाना चाहिए।

यदि आप संतान संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, तो आपको अपने घर में हरिवंश पुराण या महाभारत का पाठ करना चाहिए।

यदि आप कुत्ते के नर संतान को अपने घर में रखते हैं, तो आपको संतान अवश्य होगी ।

संतान की प्राप्ति के लिए गणेश जी की पूजा करना लाभदायक होता है।

यदि आपको संतान संबंधी कोई समस्या है, तो काले कुत्ते की सेवा करना या उसे अपने घर पर रख कर खाना खिलाना आपके लिए फायदेमंद रहेगा।

यदि स्त्री को संतान हो परन्तु जीवित न रहे, तो लाल किताब में ऐसी स्थिति से बचाव के लिए बहुत ही साधारण और सफल उपाय बताया गया है– स्त्री के गर्भवती होने पर उसके बाजु पर लाल धगा बांध दें, और संतान होने के पश्चात उस धागे को नवजात शिशु के बाजु पर बांध दें, और स्त्री को नया लाल धागा पुनः बांधे। स्त्री के बाजु पर १८ महीने तक बंधा रहना चाहिए ।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी स्त्री को बार–बार गर्भपात होता हो, तो काला धागा उसकी कमर में बांधें और संतान के जन्म के बाद यह धागा संतान के बाजु पर बांधें।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की संतान जीवित नहीं रहती है, तो संतान के जन्मदिन पर मिठाई की जगह नमकीन खाद्य पदार्थ वितरण करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, प्रसव के समय स्त्री को शारिरिक कष्ट से बचाने और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के लिए प्रसव पीड़ा के समय दो पीतल के बर्तन लेकर एक में मीठी वस्तु और दूसरे में दूध भर के स्त्री के हाथ से स्पर्श कराके रखना चाहिए, और शिशु के जन्म के बाद उसे किसी धार्मिक स्थान में दान करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी की नर संतान जीवित न रहता हो, तो उन्हे किसी धार्मिक स्थान में शिशु को जन्म देना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि संतान को कष्ट हो, तो गाय, कौए अथवा कुत्तों को अपने भोजन का एक हिस्सा दें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में छत को ढ़क कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

लाल किताब के अनुसार, यदि आपके घर में कुंए को ढक कर मकान बनाया गया हो, तो संतान होने की संभावना क्षीण होगी।

जन्म कुण्डली में यात्रा से संबंधित कुछ महत्वपू र्ण योग और उपाय

लाल किताब से जितने भी योग हम इस साफ्टवेयर में प्रयोग कर रहे हैं, उनमें से कोइ भी इस कुण्डली में लागु नहीं हुआ है। जिसकी वज़ह से यह साफ्टवेयर कोई भी निर्णय नहीं कर पाया है।

लाल किताब में भावों में बैठे हुए ग्रहों का फल और उपाय

पांचवें भाव में स्थित बृहस्पति का फल

पांचवां भाव बृहस्पति का अपना पक्का भाव है। लाल किताब में बृहस्पति को इज़्ज़त-आबरू वाला व्यक्ति और ब्रह्म ज्ञानी कहा गया है, परन्तु काल-पुरूष कुडंली के अनुसार, पांचवें भाव में सूर्य की राशि होने के कारण ऐसा व्यक्ति बहुत ही जल्द गुस्सा हो जाता है।

यदि आपकी संतान बृहस्पतिवार के दिन पैदा होती है, तो आप जीवन में बहुत ज़्यादा उन्नति करेंगे।

आपकी कुडंली में बृहस्पति और सूर्य एक साथ पांचवें भाव में बैठे हुए हैं। लाल किताब के अनुसार, इस युति से आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

पांचवें भाव में स्थित बृहस्पति का उपाय

१-कुत्ता पालें।
२-गणेश जी की पूजा करें।
३-स्कूल अध्यापक की की सेवा करे।
४-नाग और केसर जल में प्रवाहित करें।
५-कोई भी दान और उपहार न लें।
६-पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।
७-मंदिर से प्रसाद न लें।
८-चोटी रखें।
९-मांस-मदिरा का सेवन न करें।
१०-अपना चरित्र ठीक रखें।
११-पुजा स्थल की नियमित सफाई करें।
१२-बृहस्पतिवार का व्रत रखें।
१३-पीपल के पेड़ की सेवा करे।
१४-विष्णु भगवान की पुजा करें।
१५-पुखराज पहनें, पुखराज के अभाव में हल्दी लगायें।
१६-अपने घर में गेंदा या सूर्यमूखी का पौधा लगायें।

पांचवें भाव में स्थित सूर्य का फल

लाल किताब में पांचवे भाव में बैठे हुए सूर्य को ''परिवार की उन्नति का कारक'' कहा गया है। आपके पुत्र के जन्म से ही आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती चली जायेगी। यदि आप अपने मकान में पूर्व की दीवार के साथ रसोई बनायें या खाना खाने की जगह स्थापित करें, तो सूर्य का प्रभाव और भी शुभ हो जायेगा।

आपकी औलाद भी आपकी पूरी तरह से सहायता करेगी। यदि आप साधु स्वभाव के हैं, तो भी आपकी आर्थिक स्थिति बहुत ही सुदृढ़ होगी और आपकी उम्र भी बहुत लम्बी होगी। आपका बुढ़ापा भी बहुत ही मजे में कटेगा।

पांचवें भाव में स्थित सूर्य का उपाय

१–लाल मुह के बन्दर की सेवा शुभ फल देगा।
२–किसी की निन्दा न करें।
३–झुठ न बोलें।
४–संतान की शीघ्र उत्पति शुभदायक होगी।
५–अपना रसोई घर मकान के पूर्वी हिस्से में बनायें।
६– एक बुंद सरसो का तेल ४३ दिन तक जमीन पर गिरायें।
७–किये हुए वादे पूरा करें।
८–रीति–रिवाजों का पालन करें।
९–अपना चरित्र ठीक रखें।
१०–आंगन को खुला रखें, उस पर छत न डालवायें।

दूसरे भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

द्वितीय भाव में बैठे हुए चंद्रमा को लाल किताब के अनुसार बहुत ही शुभ माना गया है। इसे पहाड़ों से आता हुआ सबसे शुद्ध जल माना गया है। ऐसा जातक बुद्धिमान और धन सम्पन्न होता है। फिर भी चंद्रमा धन से संबंधित मामलो में बहुत ही शुभ फल देता है, परन्तु, जातक के माता के लिए यह स्थिति शुभ नहीं है। ऐसे जातक की शिक्षा भी उंची होती है। चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं जैसे चांदी, चावल, दूध अथवा दूध से बनी हुई सामग्री का व्यापार जातक के लिए लाभदायक होता है। जातक की उम्र भी लंबी होती है। यदि ऐसा जातक अपने घर में मिट्टी का स्थान नहीं छोड़ता है, तो कुछ स्थितियां उसके लिए दु:खद हो सकती हैं। यदि ऐसा जातक सफेद घोड़े की सवारी करता है अथवा बुजुर्ग स्त्रियों की सेवा करता है, तो वह युद्ध में हमेशा विजयी होगा। ऐसा जातक अगर अपनी माता से दान में चांदी अथवा चावल ग्रहण करता है, तो चंद्रमा और भी शुभ हो जायेगा।

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। आप बुढ़ापे में चंद्रमा के अत्यन्त शुभ फल प्राप्त करेगें।

आपकी कुंडली में चंद्रमा और शनि एक साथ द्वितीय भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इसका आपको शुभ फल प्राप्त होगा। काला घोड़ा रखना या समाज की भलाई के काम – जैसे कुआं खोदवाना या धर्मशाला बनवाना आदि – से आपके रोजगार पर शुभ असर होगा, परन्तु चंद्रमा और शनि का ये मिलन किसी दुर्घटना अथवा घातक हमले का भी सूचक है।

आपकी कुंडली में बुध छठे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपकी आंखों पर इसका बुरा असर पड़ सकता है और यह अशुभ शनि का भी सूचक है।

आपकी कुंडली में आठवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, इस घर का प्रभाव शुभ ही होगा।

दूसरे भाव में स्थित चन्द्रमा का उपाय

१– आपको अपनी माता का आशिर्वाद लेते रहना चाहिए।
२– आपको अपनी माता से चंद्रमा की वस्तुए जैसे– चांदी, चावल इत्यादि लेकर अपने पास रखना चहिए।
३– आपको अपने घर में घंटे–घड़ियाल और पीतल की वस्तुओं को नहीं रखना चाहिए।
४– आपको अपने मकान की नीव में चांदी की ईंट दबाना चाहिए।
५– आपको शिवजी की पूजा करना चाहिए।
६– आपको रात को सोते समय दूध का बर्तन सिरहाने रखकर सुबह उसको कीकर के पेड़ में डालना चाहिए।
७– यदि आपके घर में पानी की टंकी हो तो उसे हमेशा साफ कराते रहना चाहिए।
८– आपको अपने घर के छत के नीचे कुआं या हैण्ड–पम्प नहीं लगवाना चाहिए।

९- घर की चारदिवारी के अन्दर बना हुआ मंदिर आपकी संतान के लिए शुभ नहीं है।
१0- यदि आपके घर में किसी स्त्री का स्वास्थ्य खराब होता है या किसी अन्य तरह की परेशानियां आती हैं, तो हरा रंग का क पड़ा कन्याओं को ४३ दिन तक दान देना चाहिए।
११- आपको अपने घर में कुछ स्थान कचा भी रखना चाहिए।

छठवें भाव में स्थित शुक्र का फल

लाल किताब के अनुसार, जिस जातक की कुण्डली में शुक्र छठे भाव में हो उसकी पत्नी को चाहिए कि नंगे पाव कभी भी जमीन पर न चलें। यदि संपत्ति की चोरी होती है, तो समझना चाहिए कि शुक्र का फल मंदा हो रहा है।

आपको अपनी शिक्षा के अनुसार कार्य करने की बजाय कोई अलग कार्य करना चाहिए। ऐसे कार्य में आपकी उन्नति होगी। चां दी की डिब्बी में पानी रखना आपके लिए शुभ होगा।

लाल किताब के अनुसार, यह भाव शुक्र के लिए नीच है। आपके जीवन में स्त्रियों के साथ शत्रुता का वातावरण बना रहेगा।

लाल किताब के अनुसार, छठे भाव में बैठा हुआ शुक्र तकनीकी सलाहकारों, दलालों अथवा आढ़तियों के लिए शुभ फल देने वाला होता है।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप अपना धन लगाकर कारोबार शुरू करते हैं, तो आपका धन भी डूब सकता है।

लाल किताब के अनुसार, छठे भाव में बैठे हुए शुक्र का फल यदि नीच होता है, तो उसकी पहली निशानी यह है कि आपके हाथ के अंगुठों में अचानक दर्द होने लगेगा। उस समय आपको गंदे कपड़े नहीं पहनना चाहिए। यदि आप अपना चरित्र ठीक नहीं रखते है, तो संतान उत्पति में कठिनाईयां हो सकती हैं। आपको अपनी स्त्री को कपड़े, गहने इत्यादि देते रहना चाहिए।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा दूसरे या चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में शुक्र कभी भी बुरा असर नहीं देगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र और बुध एक साथ छठे भाव में बैठे हुए हैं। लाल किताब के अनुसार, आपका स्त्रियों के साथ मनमुटाव हमेशा बना रहेगा।

छठवें भाव में स्थित शुक्र का उपाय

१-जातक की स्त्री नंगे पांव जमीन पर न चलें।
२-६ दिन तक लागातार ६ कन्याओं को दूध पिलाकर दक्षिणा दें।
३-चांदी की ठोस गोली अपनी जेब में रखें।
४- ६ शुक्रवार सफेद पत्थरों को दूध से धोकर तथा सफेद चन्दन लगाकर जल में प्रवाह करें।
५-चिड़ियों को चावल या खीर डालें।
६-कांसे के बर्तन में दही का दान करें।
७-जातक की स्त्री बालों में सोने का क्लीप लगायें।
८-स्त्रीयों की सम्मान करें।
९-कपिला गाय का दान करें।
१0- इत्र, क्रीम, पाउडर का इस्तेमाल करें।
११-अपने पहनावें पर ध्यान दें।

ग्यारहवें भाव में स्थित मंगल का फल

आमतौर पर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ मंगल शुभ फल प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक और आर्थिक रूप से सुदृढ़ होता है। यदि ऐसा व्यक्ति अपने साले या भांजे के साथ कोई कारोबार करता है, तो उन्नति करेगा। अगर वह नौकरी करता है, तो उसकी नौकरी ऊँचे दर्जे की होगी।

आपके भाइयों की संख्या बृहस्पति का आपकी कुण्डली में स्थिति के हिसाब से होगी।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पहले से दसवें भाव में स्थित है। आपके भाइयों की संख्या ज़्यादा होगी।

आपकी कुण्डली में तीसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, पिता से मिला हुआ धन आपके लिए शुभ नहीं होगा। और आपकी आर्थिक स्थिति पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा।

ग्यारहवें भाव में स्थित मंगल का उपाय

१-काला-सफेद कुत्ता पालें।
२-हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ायें।
३-अपनी पैतृक संपति न बेचें।
४-मिट्टी के बर्तन में सिन्दूर या शहद भर कर रखें।
५-संतान के जन्म के बाद अपने साले या भांजे की सेवा करें।
६-मंगलवार का व्रत रखें।
७-मेहमानों को मीठा भोजन खिलायें।
८-अपने भाईयों की उचित देख-भाल करें।

छठवें भाव में स्थित बुध का फल

लाल किताब में छठे भाव में बैठे हुए बुध को ''गुमनाम योगी और दिल का राजा'' कहा गया है। आमतौर पर छठे भाव में बैठा हुआ बुध शुभ फल ही देता है। ऐसे व्यक्ति की जुबान से निकला हर वाक्य पूरा होता है और वह अपनी मेहनत से धन कमाता है।

लाल किताब के अनुसार, छठे भाव में बैठे हुए बुध वाला जातक कभी भी नेता नहीं बन सकता, परन्तु उसकी भाषण कला लोगों को प्रभावित करेगी।

लाल किताब के अनुसार, छठे भाव में बैठे हुए बुध वाला जातक आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होता है।

लाल किताब के अनुसार, आपके लिए रिश्वत या धोखे से कमाया हुआ धन नुकसानदेह साबित होगा।

लाल किताब के अनुसार, फूलों का व्यापार या मशीनरी वगैरह के कार्यों से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। आपको कभी भी मेहनत-मजदूरी (हाथ से किये गये कार्य) नहीं करनी चाहिए, नहीं तो बुध का प्रभाव अशुभ हो जायेगा।

लाल किताब के अनुसार, छठे भाव में बैठा हुआ बुध या शुक्र दूसरे भाव के ग्रह की तरह प्रभाव डालता है।

लाल किताब के अनुसार, आपको समुद्री यात्राओं से लाभ प्राप्त होगा। कृषि कार्य, भाषण कला या लिखने-पढ़ने के कार्यों से आपको विशेष तौर पर लाभ होगा। यदि आप शुभ कार्य से घर से बाहर जा रहे हैं, और यदि कोई छोटी लड़की आपको फूल

भेंट करे तो, यह बहुत शुभ शगुन होगा।

आपको अपनी पुत्री का विवाह अपने पुश्तैनी मकान से उत्तर दिशा में नहीं करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, अपने मकान का दरवाजा उत्तर दिशा में न रखें।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप डाक्टरी पेशे में हैं, तो लालच न करें। अन्यथा इसका प्रभाव बुरा होगा।

छठवें भाव में स्थित बुध का उपाय

१-किसी भी शुभ कार्य पर जाते समय अपने पास फूल रखें।
२-अपनी भतीजी या भांजी की सेवा करें।
३-चांदी की अंगुठी दायें हाथ की अंगुली में पहनें।
४-बोतल में गंगाजल भरकर कृषि भूमि में दबायें।(चंद्रमा अशुभ)
५-बहन या बेटी की शादी पुश्तैनी मकान के उत्तर में न करें।
६-मिट्टी के बर्तन में दूध भरकर विराने में दबायें।
७-बुधवार का व्रत करें।
८-दुर्गा पाठ करें।
९-अपने घर में कोई भी इलेक्ट्रानिक का सामान बिगड़ी हालत में न रखें।
१०-कमर में बेल्ट बांधे।

दूसरे भाव में स्थित शनि का फल

दूसरा भाव बृहस्पति का पक्का घर है, इसलिए इस घर में बैठे हुए शनि को गुरू के चरण में बैठा हुआ बताया गया है।

आपकी कुंडली में चंद्रमा शुभ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी माता की उम्र बहुत लंबी होगी, परन्तु पिता पर इसका शुभ असर कम ही होगा।

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, जुआ-लाटरी इत्यादि की तरफ़ आपका झुकाव ज़्यादा होगा।

दूसरे भाव में स्थित शनि का उपाय

१-उड़द, चना अथवा काली मिर्च का व्यापार उत्तम होगा।
२-माथे पर तेल लगाना अशुभ फल देगा, अतः माथे पर दूध का तिलक लगायें।
३-४३ दिल लगातार नंगे पांव मंदिर जाकर अपनी भूल के लिए ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करना चाहिए।
४-ससुराल से लाभ के लिए सांप को दूध पिलाएं।
५-उड़द, काली मिर्च, चने एवं चंदन की लकड़ी मंदिर में दान दें।
६-आपको मांस-मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए।
७-रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कुत्ते और कौवों को खिलाना चाहिए।
८-मजदूरों का मेहनत का पैसा अपने पास नहीं रखना चाहिए।

दसवें भाव में स्थित राहु का फल

दसवें भाव में बैठे हुए राहु को लाल किताब में ''सांप का मणि'' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति सफल व्यापारी या बड़ा अधिकारी हो सकता है। उसकी आयु भी लंबी होगी। ऐसा व्यक्ति कंजूस भी होगा और यदि राहु अशुभ होता है, तो उसका बुरा असर केवल धन-दौलत पर होता है।

यदि आपकी कुण्डली में राहु का अशुभ फल मिल रहा है, तो आपको चांदी के बर्त्तन में शहद डालकर घर में रखना चाहिए या अपना सिर ढ़क कर रखना चाहिए।

दसवें भाव में स्थित राहु का उपाय

१-अपना सिर नंगा न रखें।
२-नीले और काले रंग को छोड़कर, किसी अन्य रंग की टोपी न लगायें।
३-मसुर की दाल बहते हुए पानी में बहायें।
४-४ किलो गुड़ पानी में बहायें या मंदिर में दान करें।
५-अंधें लोगों को खिलायें।
६-मंगल का उपाय करें।
७-कभी-कभी मिठाई और लाल रंग का कपड़ा दान करें।
८-अंधेरे कमरे में जौ दबायें।
९-सरसो और तम्बाकु का दान करें।
१०-झुठी गवाही न दें।
११-ससुराल से मधुर संबंध रखें।
१२-घर या आंगन में धुआं न करें।

चौथे भाव में स्थित केतु का फल

चौथे भाव में बैठा हुआ केतु आम तौर पर शुभ फल नहीं देता है।

चौथे भाव में बैठा हुआ केतु माता के सुख में बहुत कमी करता है। परन्तु अपनी उम्र और धन के लिए इसका कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। आप मेहनत करने वाले और उससे संतुष्ट रहने वाले होंगे।

लाल किताब के अनुसार, केतु चौथे भाव वाला व्यक्ति प्रत्येक बात का निर्णय परमेश्वर पर छोड़ने वाला होता है। ऐसा जातक अपने पिता के लिए भाग्यशाली होता है।

आपकी कुंडली में बृहस्पति शुभ स्थिति में है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता पर इसका शुभ असर होगा, परन्तु पुरूष संतान काफी कठिनाई के बाद प्राप्त होगी।

आपकी कुंडली में चंद्रमा और मंगल तीसरे या चौथे भाव में नहीं बैठे हैं। लाल किताब के अनुसार, केतु के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए कभी-कभी आपको मंदिर या किसी धर्मस्थान में सोना दान देना चाहिए। अपने कुल पुरोहित को पीली वस्तुऐं दान देकर उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।

चौथे भाव में स्थित केतु का उपाय

१-पीले कपड़े में सोना, दाल इत्यादि पीली वस्तुएं अपने कुलपुरोहित को दान करें और उनका आशिर्वाद लें।
२-चने की दाल बहते पानी में बहाए।
३-किसी भी वजह से आपके पुत्र को कोई कष्ट है, तो कुत्ता पालें।

४–मन की शांति के लिए चांदी पहनें।
५– गणेश चतुर्थी का व्रत रखें।
६– दहेज में दो चारपाईयां और सोने की अंगुठी अवश्य ले।
७–तिल, नींबू, केला इत्यादि को जल में प्रवाहित करें।
८–चितकबरे कुत्ते को अपने भोजन का एक हिस्सा अवश्य दें।

लाल किताब से अन्य महत्वपूर्ण भविष्यफल

अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह बैठ जायें, तो ऐसी कुण्डली को अंधें ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से भी संबंध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक आपस में शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्थिति पैदा हो जाती है। जातक के नौकरी या व्यापार में पूरी तरह से स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली(टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते है। इस ग्रह स्थिति का जातक के मानसिक स्थिति और व्यवसायिक जीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे गृहस्थ सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में भी कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष – यह कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली(टेवा) नहीं है।

धर्मी टेवा (कुण्डली)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में बृहस्पति के साथ शनि बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल-पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष – यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

नाबालिग कुंडली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हुआ है या उनमे केवल बुध बैठा हुआ है। ऐसी कुण्डली, नाबालिग टेवा (कुंडली) कहलाती है। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शाक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षो तक प्रत्येक वर्ष एक-एक ग्रह का प्रभाव निम्न रूपेड़ पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुवित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

(१) उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(२) उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(३) उम्र के तीसरे साल में नवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(४) उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(५) उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

(६) उम्र के छठे साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(७) उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(८) उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(९) उम्र के नवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(१०) उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(११) उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(१२) उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष - यह कुंडली (टेवा) नाबालिग टेवा नहीं है।

कालसर्प योग और उससे बचाव

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग नहीं है।

लाल किताब में राजयोग

लाल किताब में राजयोग का यह मतलब यह नहीं है कि ऐसा जातक कोई बड़ा राजा, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ही हो, अपितु राजयोग से कुण्डली में यह संकेत मिलता है कि जातक का रहन-सहन का स्तर राजाओं की तरह जरूर हो सकता है। आपकी कुण्डली में राजयोग की कोई भी स्थिति नहीं लागू हो रही है।

लाल किताब में ऋण और उनके उपाय

मातृ ऋण-

आपकी कुण्डली में केतु चौथे भाव में स्थित है, जिसकी वजह से चंद्रमा पर बुरा असर हो रहा है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में लागू हो रहे मातृ ऋण का परिचायक है।

ऋण के कारण और लक्षण-

१-सतांन के जन्म के बाद मां की उचित देख-भाल न हुई हो।

२-उसे घर से बाहर निकाल दिया गया हो।

३-उस पर दु:ख पड़ते समय उसकी दवा न हुई हो, और उसे दु:ख में इसी तरह से छोड़ दिया गया हो।

४-घर के आस-पास का कुआं, तलाब इत्यादि सुख गये हों और उसमें कुड़ा-कचड़ा भर दिया गया हो।

५-घर के आस-पास के मंदिर को नष्ट कर दिया गया हो, और उसमें कुड़ा-कचड़ा फेंका जा रहा हो।

प्रभाव-

इस स्थिति में लाल किताब के अनुसार, उस व्यक्ति का संचित धन सम्पत्ति बेकार चली जाती है। उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है। उसकी शिक्षा में बाधाऐं आती हैं, वह व्यक्ति बुरे लोगों के संगति में पड़कर जुआ वगैरह खेलना शुरू कर देता है। उसकी महसुस करने की शक्ति खत्म होने लगती है।

उपाय–

आपको अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर मात्रा में चांदी लेकर नदी में बहाना चाहिए।

लाल किताब में मांगलिक दोष और उपाय

लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में नहीं बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में आपकी कुण्डली में मांगलीक दोष लागु नहीं हो रहा है।

लाल किताब में वर्जित और अवर्जित उपाय

(१)आपकी कुण्डली में चन्द्रमा उच का है, आपको चन्द्रमा से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए।

(२)आपकी कुण्डली में बुध उच का है, आपको बुध से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए।

(३)आपकी कुण्डली में शुक्र नीच का है, आपको शुक्र से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं लेना चाहिए।

(४)आपकी कुण्डली में राहु नीच का है, आपको राहु से संबंधित वस्तुओं का दान नहीं लेना चाहिए।

(५)यदि आपके घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी है जिसमें दरवाजे के अतिरिक्त रोशनी आने के लिए कोई भी जगह नहीं है तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान या खिड़की नहीं खोलनी चाहिए, अन्यथा आपकी संतान पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

किसी कारण वश ऐसी कोठरी की छत बदलवानी पड़े तो पुरानी छत को गिराने से पहले उस कोठरी के उपर नई छत डलवा लें।

(६)यदि आपके घर में सोने चांदी के गहनों या रूपये–पैसे रखने के लिए सेफ, आलमारी, तिजोरी इत्यादि है, तो उसे कभी भी पुरी तरह खाली नहीं रखें।

(७)अपने मकान के कुछ हिस्सों में मिट्टी वाला स्थान अवश्य रखें।

(८)दक्षिणमुखी मकान में न रहें।

(९)झूठ न बोलें।

(१०)झूठी गवाही न दें।

(११)अपशब्द न बोलें।

(१२)किसी को गाली न दें।

(१३)क्रूरता न करें।

(१४)ईश्वर पर विश्वास रखें।

(१५)देवी- देवताओं की उपासना श्रद्धापूर्वक करें।

(१६)मांस-मछली न खायें।

(१७)शराब न पीयें।

(१८)कपड़े सलीके से पहनें।

(१९)कान-नाक छिदवायें।

(२०)दांत साफ रखें।

(२१)संयुक्त परिवार में रहें।

(२२)ससुराल से मधुर संबंध बनाकर रखें।

(२३)कन्याओं की पूजा करें। उन्हें हरे वस्त्र, उत्तम भोजन आदि देकर प्रसन्न रखें।

(२४)बहन-बेटी को मीठी वस्तुओं का उपहार दें।

(२५)जिस प्रकार माता की सेवा करते हैं, उसी प्रकार पत्नी की भी उचित देखभाल करें।

(२६)भाभी (बड़े भाई की पत्नी) की सेवा करें।

(२७)परिवार के सदस्यों का पालन करें।

(२८)मुफ्त में किसी से कुछ न लें।

(२९)नि:संतान की संपत्ति न लें।

(३0)बड़ों के चरण स्पर्श करके आशिर्वाद प्राप्त करें।

(३१)यथा संभव दक्षिणमुखी मकान में न रहें।

(३२)घर की छत में छेद न रखें।

(३३)घर में थोड़ी बहुत कची जगह अवश्य रखें।

(३४)विकलागों को भोजन दें, उनकी सहायता करें।

(३५)पड़ोस में कोई असहाय विधवा हो तो उनकी सहायता करें।

(३६)मनुष्येतर जीवों - गाय, कुत्ता, कौवा, बन्दर आदि को भोजन दें।

(३७)काने और गंजे आदमी से सावधान रहें।

(३८)नाक को हमेशा साफ रखें।

लाल किताब से एक साथ बैठे ग्रहों का फल

आपकी कुण्डली में सूर्य और बृहस्पति एक साथ पांचवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में, बृहस्पति आपके पिता का प्रतिनिधि है, और सूर्य उसका पुत्र है। आपके भाग्य का लाभ आपको और आपके पिता को मिलेगा। सूर्य और बृहस्पति का योग चन्द्रमा का निर्माण करता है। आपका भाग्य चन्द्रमा के सदृश्य मोती की तरह श्वेत और चाँदी के जैसा चमकीला होगा। आप धनी होगें। आपकी संतान आपकी सहायता करेगीं। आप अपने, शत्रुओं का दमन करेगें। आपको शुभ परिणाम प्राप्त होगें।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा और शनि एक साथ दूसरे भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस युति को अंधा घोड़ा माना जाता है। एक ग्रह शुभ फल देता है, तो दूसरा अशुभ फल प्रदान कर सकता है। इन दोनों का संयुक्त प्रभाव आपके जीवन में अपनी आयु के ४४वें वर्ष तक मिलेगा। दोनों ग्रह में से अधिक प्रबल ग्रह को ज्ञात करने के लिये आपकी पत्नी के जीवन और उसकी स्थिति का अवलोकन करना पड़ेगा। इस युति का प्रभाव नीच केतु के समकक्ष होता है। आपको चोरी और हानि का भय हो सकता है, जो आपकी आयु के ३६ वर्ष के बाद भी कायम रह सकता है। यदि आपकी माता को कष्ट हो, तो इसका अर्थ है, कि आपकी कुण्डली में सूर्य के नीच होने से शनि का अशुभ प्रभाव अधिक है। लेकिन यदि इस युति पर किसी ग्रह की शुभ दृष्टि है, तो उससे आपको सहायता मिलेगी। बुरे समय में आपको घर या घर के पास किसी काले सफेद जानवर को एक ही रंग में रंग दें। यदि आपकी दृष्टि कमजोर हो जाये, तो ४३ दिन तक गर्म पानी का सेवन न करें। आपको जल में नीबू, चीनी और थोड़ा दूध मिलाकर पीना चाहिये। इसमें आप शनि से संबंधित मादक पदार्थ भी मिला सकते हैं। यदि चन्द्रमा कमजोर है, तो आप साँप को दूध पिलायें। अगर आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम नहीं है, तो आप चन्द्र ग्रहण के समय शनि से संबंधित वस्तुयें, जैसे बादाम, नारियल आदि को बहते पानी में प्रवाहित करें। पैसे रखने के लिये चमड़े का पर्स और लोहे की संदूक का प्रयोग न करें। आपको हमउम्र के लोगों के साथ में व्यापारिक साझेदारी नहीं करना चाहिये।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र एक साथ छठे भाव में स्थित हैं। आप समृद्धशाली होगें। यदि इस युति पर अन्य ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है, तो आपको शुक्र का शुभ फल मिलेगा। यह युति राजयोग का निर्माण करती है। इन दोनों ग्रहों की अवधि समान होती है, और ये दोनों शक्तिशाली ग्रह हैं। ये दोनों ४४ वर्ष की आयु तक साथ रहते हैं। आप धनी होगें, लेकिन आपकी सरकारी नौकरी में स्थिरता का अभाव हो सकता है। आप अर्ध सरकारी नौकरी कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यदि आपके पुत्र नहीं हुआ, तो आपकी कन्या ही आपके पुत्र का कार्य करेगी। स्त्रियों से आपको लाभ प्राप्त होगा। आपका वैवाहिक जीवन सुखी और आनन्दमय होगा। आप लेखन और संपादन से आय अर्जित करेगें। आप प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता के रूप में बहुत सफल हो सकते हैं। आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति प्राप्त होगी, और सही तरीके से अर्जित किया गया धन आपके जीवन में उपयोगी होगा। संतान की तरफ से आप चिंतित हो सकते हैं।

ग्रहों के लिए रत्न और रूद्राक्ष

लग्नाधिपति के लिए रत्न

आपका लग्न स्वामी बुध है। लेकिन यह त्रिका भाव में स्थित है, इसलिए आपको बुध के लिए रत्न धारण करने की सलाह नही दी जा सकती है।

नौवें भाव के स्वामी के लिए रत्न

चूँकि आपकी कुण्डली में नौवें घर का स्वामी त्रिका भाव का स्वामी है, इसलिए नौवें घर के स्वामी के लिए रत्न पहनना उपयुक्त है।

योग कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी कुण्डली में कोइ प्राकृतिक योग-कारक ग्रह नहीं है

तात्कालिक योग कारक ग्रह के लिए रत्न

बृहस्पति ग्रह आपकी कुण्डली में तात्कालिक योग-कारक है। चूँकि तात्कालिक योग-कारक ग्रह न तो तुगंस्थ है, न ही नीचस्थ है और न ही अपने भाव में स्थित है, इसलिए आप बृहस्पति ग्रह के लिए रत्न पहन सकते हैं।

सोने की अँगुठी मे सात रत्ती का पुखराज डलवाकर इसे वृहस्पतिवार के दिन सीधे हाथ की तर्जनी या अनामिका ऊँगली में धारण करें। यदि आप पुखराज प्राप्त नही कर सकते हैं तो इसके स्थान पर पीला तामड़ा रत्न या निंबुई रत्न पहन सकते हैं।

रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:

व्यासदेव का वेदिक मंत्र :

देवानां च ऋषिणां च गुरूं काण्चन संनिभम्
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि ब्रहस्पतिम्।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् ग्रम् ग्रीम् ग्रोम् सह गुरूवे नमः।

बीज मंत्र :

ब्रीम वृहस्पतये नमः।

रूद्राक्ष के लिए सुझाव

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है, इसलिए आपके लिए नौ मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव शक्ति हैं। हालॉकि ये नवरात्र (दशहरा या दूर्गा पूजा) के दौरान दुर्बल होते हैं। ये ऊर्जा और शक्ति प्रदान करते हैं, जिसकी सहायता से हमें धन की प्राप्ति होती है तथा हर कार्य में हम सफलता प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष को धारण करते समय आपको निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:
रूद्राक्ष के लिए मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् हम् नमः।

रूद्राक्ष के लिए पंचाक्षरी मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् व्यम् रम् लम्।

रूद्राक्ष के लिए दुसरे अन्य सुझाव :

चूँकि आपके चन्द्रमा का नक्षत्र स्वामी बुध है, इसलिए आपके लिए दस मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जॉच:

(अ)तैरान जॉच :- पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

(ब) तॉबा जॉच :- असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता हैं और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं ।

(वि प्रा - भद्राक्ष भी रूद्राक्ष की तरह होता है, परन्तु यह मृदुल रंग एवं कम ताप देने वाला होता है।)

(स) दूध जॉच :- एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नही होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

वि प्रा - असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आर्शीवाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए मंत्रः-

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्रः-

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

Aryan

वर्षफल कुण्डली - १७

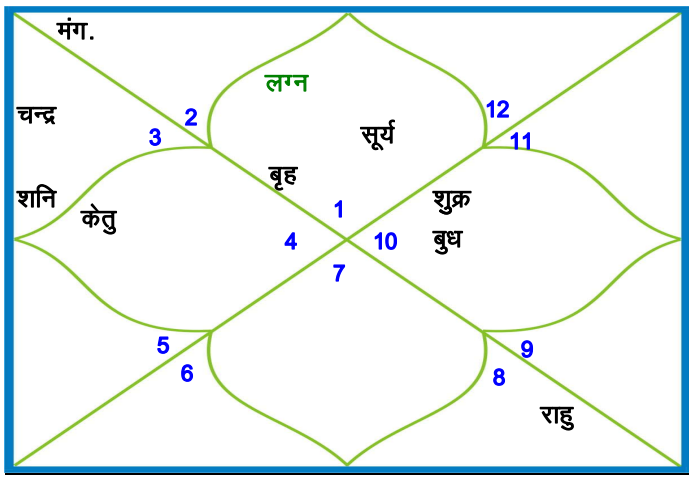

२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२ तक

लग्न कुण्डली (टेवा)

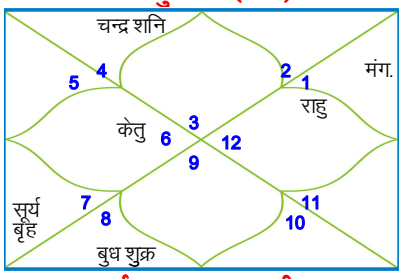

वर्षफल चन्द्र कुण्डली

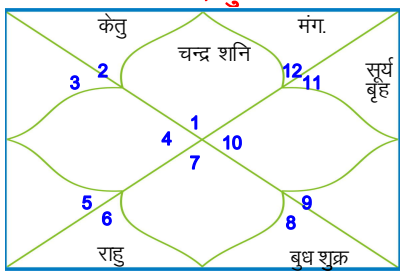

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	ग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष	विशेष
सूर्य	लग्न	ग्रह	हॉ			हॉ			उच्चस्थ	शुभ भाव में
चन्द्रमा	तृतीय	राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में
मंगल	द्वितीय	राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में
वुध	दशम्	ग्रह						हॉ	नीचस्थ	अशुभ भाव में
वृहस्पति	लग्न	राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में
शुक्र	दशम्	राशि				हॉ		हॉ		
शनि	तृतीय	राशि						हॉ		शुभ भाव में
राहु (बद)	अष्टम्	राशि								अशुभ भाव में
केतु	चतुर्थ	राशि				हॉ	हॉ			

लाल किताब की सामान्य दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु			**पूर्ण**						
केतु				**पूर्ण**		**पूर्ण**			

ग्रहों की दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									0
बृहस्पति									
शुक्र									0
शनि									
राहु			0						0
केतु				0		0		0	

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने वाला
१	सूर्य, बृहस्पति	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२	मंगल	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	चन्द्रमा, शनि	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	केतु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
६		बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	राहु	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०	बुध, शुक्र	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११		शनि	शनि				बृहस्पति
१२		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

Aryan

वर्षफल कुण्डली -१७

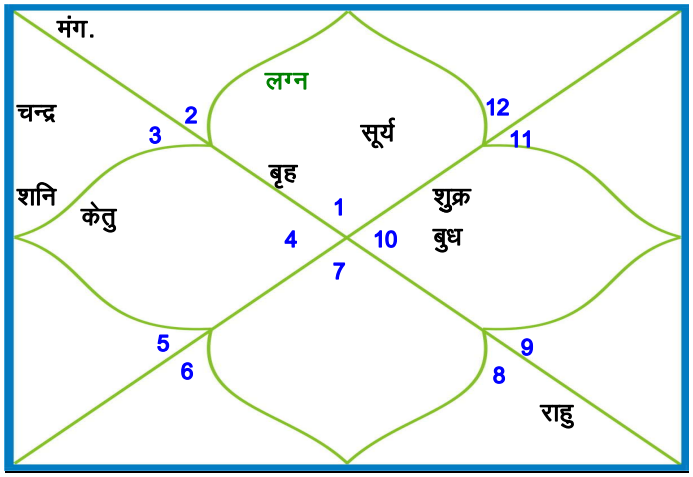

२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२ तक

लग्न कुण्डली (टेवा)

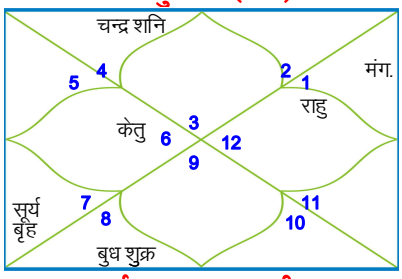

वर्षफल चन्द्र कुण्डली

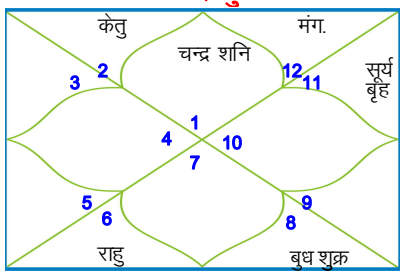

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	ग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष	विशेष
सूर्य	लग्न	ग्रह	हॉ			हॉ			उच्चस्थ	शुभ भाव में
चन्द्रमा	तृतीय	राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में
मंगल	द्वितीय	राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में
वुध	दशम्	ग्रह						हॉ	नीचस्थ	अशुभ भाव में
वृहस्पति	लग्न	राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में
शुक्र	दशम्	राशि				हॉ		हॉ		
शनि	तृतीय	राशि						हॉ		शुभ भाव में
राहु (बद)	अष्टम्	राशि								अशुभ भाव में
केतु	चतुर्थ	राशि				हॉ	हॉ			

लाल किताब की सामान्य दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु			पूर्ण						
केतु				पूर्ण		पूर्ण			

ग्रहों की दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									0
बृहस्पति									
शुक्र									0
शनि									
राहु			0						0
केतु				0		0		0	

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने वाला
१	सूर्य, बृहस्पति	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२	मंगल	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	चन्द्रमा, शनि	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	केतु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
६		बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	राहु	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०	बुध, शुक्र	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११		शनि	शनि				बृहस्पति
१२		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

वर्षफल (१७) में ग्रहों की दृष्टि

२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२ तक

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु			पूर्ण						
केतु				पूर्ण		पूर्ण			

ग्रहों की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									0
बृहस्पति									
शुक्र									0
शनि									
राहु			0						0
केतु				0		0		0	

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य								0	
चन्द्रमा				0		0			
मंगल									
बुध									
बृहस्पति								0	
शुक्र									
शनि				0		0			
राहु		0					0		
केतु									

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल				0		0			
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु									0
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य				0		0			
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति				0		0			
शुक्र									
शनि									
राहु									
केतु	0				0				

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य				0		0			0
चन्द्रमा			0						
मंगल	0				0				
बुध									
बृहस्पति				0		0			0
शुक्र									
शनि			0						
राहु									
केतु		0					0		

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य		0					0		
चन्द्रमा	0				0				
मंगल									0
बुध								0	0
बृहस्पति		0					0		
शुक्र								0	0
शनि	0				0				
राहु				0		0			
केतु			0	0		0			

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध			0						
बृहस्पति									
शुक्र			0						
शनि									
राहु									
केतु								0	

लाल किताब से वर्षफल

वर्षफल का साल - १७
(२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२ तक)

पहले भाव में स्थित सूर्य का फल

आपके वर्षफल कुण्डली सूर्य की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में सूर्य की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में सूर्य पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में सूर्य कायम है।
आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य अपने मित्र बृहस्पति के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शुभ स्थिति में पहले भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह वर्ष आपके लिए भाग्यशाली और सर्वसिद्धिप्रद है। सूर्य के शुभ होने से आपको अनेकानेक शुभ फल प्राप्त होगें। आपको नौकरी/कारोबार में सफलता और सरकारी कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके पुरूषार्थ में वृद्धि होगी और आपके शत्रुओं का नाश होगा। आपको व्यापारिक गतिविधियों में सफलता प्राप्त होगी। अपने व्यापार में आपको दिल से ज़्यादा दिमाग का उपयोग करना चाहिए। इस वर्ष आप एक से ज़्यादा तीर्थ यात्रायें करेंगे।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

इस वर्ष सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) मांस मदिरा का सेवन न करें।
(२) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(३) सूर्य को मीठे जल का अर्ध्य दें।

तीसरे भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपके वर्षफल कुण्डली चन्द्रमा की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में चन्द्रमा की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा कायम है।
आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभ भाव में बैठा है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा तीसरे भाव में शुभ स्थिति में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी मानसिक और पारिवारिक स्थिति इस वर्ष सुदृढ़ होगी। पुराने दोस्तों से मुलाकत होगी। इस वर्ष आपको पर्यटन और भ्रमण करने की तीव्र लालसा होगी, और आप कई व्यापारिक यात्रायें भी करेंगे। अपने हाथ में लिए हुए कार्यो को आप सफलता पूर्वक पुरा करेंगे।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

इस वर्ष चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) खाने-पीने के लिए चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें।
(२) दुर्गा पूजन करवायें।
(३) अपनी कन्या संतान के पैसे का उपयोग न करें।

दूसरे भाव में स्थित मंगल का फल

आपके वर्षफल कुण्डली मंगल की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में मंगल की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में मंगल कायम है।
आपकी कुण्डली में मंगल शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में मंगल अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में, दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, नयी व्यापारिक योजनाओं के क्रियावयन के लिए यह वर्ष उत्तम फलदायक है। संतान पक्ष से आपको खुशियां प्राप्त होंगी। इस वर्ष आप हर प्रकार से सुखी रहेंगे। इस वर्ष आप बहुत महत्वपूर्ण फैसले लेगें और उन पर कायम भी रहेगें। आपके पारिवारिक सदस्य आपक ी हरसंभव सहायता करेगें।

वर्षफल में मंगल का उपाय

इस वर्ष मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) घर में मृगछाला रखें।
(२) चांदी की अंगुठी पहनें।
(३) अपने भाईयों से मन-मुटाव न करें।
(४) अपनी जेब में लाल रूमाल रखें।
(५) घर आये मेहमानों को खातिरदारी करें।
(६) मीठे भोजन का सेवन करें।

दसवें भाव में स्थित बुध का फल

आपके वर्षफल कुण्डली बुध की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में बुध की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप किसी निर्माण कार्य में लगे हुए हैं, तो उसमें बाधायें आ सकती हैं। आपको इस वर्ष नशे इत्यादि के सेवन से बचना चाहिए अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर हो सकता है। आप अपनी बहन, बुआ और बेटी के धन का किसी भी तरीके से उपयोग नहीं करना चाहिए। इस वर्ष आपके पुत्र की पढ़ाई अथवा नौकरी/व्यापार में बाधायें आने की भी पूरी संभावना हो सकती है।

वर्षफल में बुध का उपाय

इस वर्ष बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने घर में तुलसी, मनीप्लांट इत्यादि चौड़े पत्तों वाले पौधे नहीं लगायें।
(२) मांस-मदिरा इत्यादि के सेवन से बचें।
(३) सुखा नारियल मंदिर में चढ़ायें।
(४) बचा हुआ भोजन मछलीयों को खिलायें।
(५) मजदूरों की सेवा एवं सहायता करें।

पहले भाव में स्थित बृहस्पति का फल

आपके वर्षफल कुण्डली बृहस्पति की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में बृहस्पति की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में बृहस्पति कायम है।
आपकी कुण्डली में बृहस्पति शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में बृहस्पति अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में बृहस्पति अपने मित्र सूर्य के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शुभ स्थिति में होकर पहले भाव में बैठा हुआ है। आप लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष शिक्षा से संबंधित कार्यों में विशेष रूचि रहेगी और इससे लाभ भी प्राप्त होगा। इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना भी प्रबल होगी। आपके पिता और दादा के मान-सम्मान में वृद्धि होगी। दुसरों के प्रति आपका व्यवहार भी काफी शालीन और मधुर होगा। आप अपने गुरूजनों और साधु-संतों की की सेवा करेगें। आपको सरकार के तरफ से सहयोग और सहायता प्राप्त होगी।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

इस वर्ष बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी से भी मुफ्त में कोई उपहार या दान न लें।
(२) केसर या हल्दी का तिलक लगायें।
(३) अपने से बड़ों का आशिर्वाद लें।

(४) पुष्कर जी में कार्तिक पूर्णिमा का स्नान करें।

दसवें भाव में स्थित शुक्र का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शुक्र की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शुक्र की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शुक्र कायम है।
आपकी कुण्डली में शुक्र अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में शुक्र अपने मित्र बुध के साथ बैठा है।
आपकी कुण्डली में शुक्र पर उसके मित्र ग्रह केतु की पूर्ण दृटि पड़ रही है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में होकर दसवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यदि आप विवाहित हैं, तो दाम्पत्य जीवन सर्वदा खुशहाल रहेगा। आपको अपनी पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा और उनका स्वास्थ्य भी उत्तम होगा। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस वर्ष विवाह का योग बन रहा है। आपकी पत्नी आपसे धनी परिवार की होगी। सौन्दर्य प्रसाधन और सोने चांदी के व्यापार से आपको काफी आमदनी होगी। आपके मन में लालच की भावना भी प्रबल हो सकती है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

इस वर्ष शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आपकी पत्नी को अपने गुप्तांगों को दही से धोना चाहिए।
(२) कपिला गाय का दान करना चाहिए।
(३) अपना चाल-चलन ठीक रखना चाहिए।
(४) शराब, मांस और मछली का सेवन न करें।

तीसरे भाव में स्थित शनि का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शनि की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शनि की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शनि अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में शनि अपने शत्रु चन्द्रमा के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने बन्धु-बान्धवों से विरोध का सामाना करना पड़ सकता है। अचानक धन हानि की भी संभावना है। दूसरों का व्यापार भी आपसे बुरी तरह प्राभावित हो सकता है। भाइयों से अलगाव की भी संभावना है। कुत्तें आदि जानवरों से आपको बच कर रहना चाहिए। आपको गलत तरीकों से धन नहीं कमाना चाहिए। भूमि या भवन से संबंधित किसी परेशानी का भी आपको सामना करना पड़ सकता है।

वर्षफल में शनि का उपाय

इस वर्ष शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) शराब और मछली का सेवन न करें।
(२) घर की छत पर दरवाजे का चौखट न रखें।
(३) घर में बबुल या बेर का पेड़ लगायें।
(४) घर के अंत में एक अंधेरी कोठरी छोड़े।

आठवें भाव में स्थित राहु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली राहु की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में राहु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में राहु अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। चोरी आदि की घटनाओं से धन हानि हो सकती है। ऋण की अधिकता से आपका मानसिक संतुलन बिगड़ सकता है। गलत लोगों की संगत आपके लिए घातक हो सकती है। आपके जन्मदिन से आठवें महीने में आपके लिए परेशानियां और भी बढ़ जायेगी। बिजली संबंधी कार्य आपको घाटे में डाल सकते हैं।

वर्षफल में राहु का उपाय

इस वर्ष राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास रखें।
(२) दक्षिणमुखी मकान में न रहें।
(३) लकड़ी का कोयला अपने मकान में न रहने दें।
(४) ४३-४३ बादाम किसी धार्मिक स्थान में अपने जन्मदिन से आठवें महीने के शुरू होते ही चढ़ायें और उसमें से ४३ बादाम घर लाकर सफेद बटुए में रखें।

चौथे भाव में स्थित केतु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली केतु की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में केतु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में केतु कायम है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके उत्साह और सामर्थ में वृद्धि होगी। आप अपनी जायदाद को लेकर कुछ चिन्तित रह सकते हैं। पिता और गुरूजनों की सेवा क रना आपके लिए लाभदायक होगा। अपने पारिवारिक सदस्यों से आपका संबंध मधुर बना रहेगा।

वर्षफल में केतु का उपाय

इस वर्ष केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी धार्मिक स्थान में हल्दी, केसर या चने की दाल दान करें।
(२) कुत्तों को न मारें।
(३) कुल-पुरोहित की सेवा करें।

इस वर्ष की अन्य महत्वपूर्ण भविष्यवाणियाँ

आपके वर्षफल कुण्डली में शुक्र दसवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष परस्त्री गमन से बचना च ाहिए।